अथ

श्रीसत्यनारायण भजनावली

प्राप्ति-स्थान :—

जेठमल गोपीकिसन

११३, मनोहरदास चौक,

कलकत्ता—७

मूल्य शुद्ध भक्ति

ॐ

श्री श्री १००८ श्रीसत्यनारायण भगवान के
चरणों में श्रीसत्यनारायण भजनावली
सादर समर्पित। अगर इसमें भ्रमवश
त्रुटियाँ रह गई हों तो भक्तजन
क्षमा करें।

फाल्गुन शुक्ल १० शनिवार सं २०२४
ता० ९ मार्च १९६८

आपका
सेवक

ॐ

विश्वव्यापी सच्चिदानन्दस्वरूप आपको वारंवार नमस्कार है, तप, योग, श्रुति, ज्ञानस्वरूप प्रभु आपको नमस्कार है। शैव जिसे शिव मानकर, वेदान्ती जिसे ब्रह्म समझकर, जैन जिसे अर्हत मानकर तथा मीमांसक जिसे कर्म समझकर भजते हैं, वही श्री सत्यनारायण भगवान सब भक्तजनों की मनोकामना पूर्ण करें

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

श्रीगणेशाय नमः

श्रीसत्यनारायण भजनावली

सत्यनारायणं देवं वन्देऽहं कामदं प्रभुम् ।
लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः ॥

विषय सूची

श्रीमद्गुरु वन्दनम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
येन धौता गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः ।
तमश्चाऽज्ञानजं भिन्नं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

प्रातः स्मरणम्

१—श्रीमद्गणेशस्य

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूर पूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् ।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥
प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमानमिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम् ।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिप-यज्ञसूत्रं पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय ॥
प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्त-शोक-दावानलं स्मरहृदं वरकुञ्जरास्यम् ।
अज्ञानकानन-विनाशनहव्यवाहमुत्साहवर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् ।
प्रातःकाले स्मरेन्नित्यं विघ्नस्तस्य न जायते ॥

२—श्रीमत्परब्रह्मणः

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्म-तत्त्वं, सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम् ।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यं, तं सर्वभूतहृदयं न च भूतसंघः ॥
प्रातर्नमामि मनसा वचसामगम्यं वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचंस्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥
प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितम्वै ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं त्रैलोक्यविजयप्रदम् ।
यः स्मरेत्प्रातरुत्थाय सोऽभीष्टं समवाप्नुयात् ॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥
देवस्तुति भागवत १०।२।२६

॥ ॐ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(१)

म्हाने बुध दीजो महाराज, गजानन गौरी के नन्दा ॥टेर॥

पिता तुम्हारा है शिवशङ्कर, मस्तक पर चन्दा।
मात तुम्हारी है पार्वतो, ध्यावै सब बन्दा॥

मूसे बाहन दूँद दुँदाला, परसु हाथ लैंदा।
थारें गल बैजन्ती माला विराजे, चढ़े पुष्प गैंदा॥

जो नर तुमको नहीं मनावें उनका भाग मंदा।
जो नर तुमरी करे ध्यावना, चले रीजक धन्धा॥

विघ्न - निवारण मंगल - कारण, विद्यावर दैन्दा।
कहता 'काळूराम' भजे से कटे पाप फन्दा॥

(२)

भजन भैरवी

थारो दरस मोहि भावै श्रीगंगा मैया ।।टेर।।

हरि के चरण से प्रगटी भगवती, शङ्कर शीश चढ़ावै ।।१।।
सुरनर मुनि तेरी करत बीनती, वेद विमल जस गावैं ।।२।।
जो कोई गंगा मैया तेरो, जल पीवे वो नर तर जावै ।।३।।
जो गंगाजी स्नान करे नित, फेर जनम नहीं पावै ।।४।।
"दास नारायण" शरण तिहारी, जनम-जनम जस गावै ।।५।।

गंगा-स्तुति

अरज सुन गंगा महरानी, चेत कर भक्तन के कानी ।।टेर।।
सेवाकर भागीरथ ल्यायो, सुयश तेरो मृत्युलोक में छायो।
महातम वेदन में गायो, अन्त मन संतन के भायो ।।
दोहा—स्वर्गलोक से उतरी, भक्त सुधारण काज।
सुर नर मुनि तेरो ध्यान धरत है, राखो भक्तकी लाज ।।
शीश धर शिवशंकर मानी ।।१।।
धरम के हेतु रूप धारा, पाप सब जग का धो डारा।
काज हरि भक्तन का सारा, वंश भागीरथ उद्धार ।।
दोहा—सुर नर मुनि जन बीनवे, करे तिहारो जाप।
जो गंगाजी स्नान करत है, कटै जन्म का पाप ।।
वेद में भाषत है बानी ।।२।।

आचमन अन्त समय पावे, दूत सब जम का हट जावे।
पारषद ठाकुर का आवै, आय वैकुण्ठां ले जावे॥

दोहा—गगा तुम्हारे भक्त की, कोई न पूछे बात।
तारा मण्डल छेद कर विष्णु लोक ले जात॥
रही नहीं तीन लोक छानी ॥३॥

मात मैं आयो शरण थारी, लाज तुम रख लीजो म्हारी।
भक्त की काटो यम वेरी, रती मत कीजो ना देरी॥

दोहा—प्राण विप्र की बीनती, सुनियो चित्त लगाय।
झूठी साख भरे गंगा की, जासी जम के द्वार॥
मार वो खायगा अभिमानी ॥४॥

प्रार्थना

हाथ जोड़ बिनती करूँ, धरूँ चरणन में शीश।
ज्ञान भक्ति मोहि दीजिये परम पिता जगदीश॥

दया दृष्टि अैसी करो हे करुणामय राम।
सुमिरत निस दिनही करूँ राम-राम श्रीराम॥

नाम तिहारो है प्रभु, सब मंगल को मूल।
ज्ञान नयन तासो खुले, मिटे सकल भवसूल॥

चित चैतन्य होय मम, चञ्चलता मिट जाय।
प्रभु अपने निज रूप में, लीजै मोहिं मिलाय॥

प्रेम अमीरस को मधुर, करूँ पान दिन रैन ।
पतित उधारण है प्रभु, कीजै करुणा नैन ॥

बुद्धि निर्मल कीजिये, हे करुणामय राम ।
प्रभु ! तव शीतल छाँह में, करूँ सदा विश्राम ॥

मगन रहूँ दिन-रात मैं, पी नामामृत सार ।
सदा श्रवण करता रहूँ, ओम् ओम् ओम्कार ॥

मेघनाद, सुमृदङ्ग ध्वनि, ढप सारङ्गी सितार ।
बसी रहे मम श्रवण में; वीणा की झंकार ॥

शिव सनकादि सुर करें; करें नित्य गुण-गान ।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, रखना मेरा मान ॥

मम मन मन्दिर में प्रभु ज्ञान दीप जग जाय ।
आत्म-रूप निरखा करूँ भेद भ्रम मिट जाय ॥

मैं-तू, मम-तव दूर हो ऊँच नीच न लखाय ।
"तुला" करुणा प्रेम सब, चित में देहु बसाय ॥

ज्ञान भक्ति वरदान मैं, माँगूं बारम्बार ।
शीश नवाय विनती करूँ करो प्रभु स्वीकार ॥

नहि बुद्धि नहि बाहु बल, नहि खर्चनको दाम ।
मो सम पतित पतंगकी, पत राखो भगवान ॥

दीनदयाल बिरद संभारी, हरहु नाथ मम संकट भारी ।
मंगल-भवन अमंगल-हारी, द्रवऊ सो दशरथ अजिर बिहारी ॥

कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीह्ना, ताते नाथ बिसरायऊ मोहि दीना
जो करनी समुझै प्रभु मोरी, नहि विस्तार कलप सत कोरी ॥

प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणा सिन्धु खरारि।
आये शरण प्रभु राखियो, सब अपराध बिसारि ॥

मो सम दीन न दीनहित, तुम्ह समान रघुवीर।
अस बिचारि रघुवंश मणि हरहु विषम भव भीर ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

॥ धुन ॥

नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविन्दा।

तू ही नटवर तू ही नागर, तू ही बालमुकुन्दा ॥भजो॥

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल सांवरी सूरत मुख चंदा।
मथुरा में हरि जन्म लियो है भये गोकुल नभ चन्दा ॥ १ ॥
यमुना तट पर रास रचाई संग गोपियन के वृन्दा।
कालीदह में कूदि पड़े जब फण-फण नृत्य करन्दा ॥ २ ॥
तज गोपियन द्वारापति धाये डारि प्रेम के फन्दा।
द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो थाके कुरू मति मन्दा ॥ ३ ॥
दुनिया है सब गोरख धन्धा, छुट जायगा यम का फंदा।
मत होवे माया में अंधा, रंग लगा लोभ का गंदा ॥ ४ ॥
सब देवन में कृष्ण बड़े हैं, ज्यों तारों बिच चंदा।
सब गोपियन में राधाजी बड़ी हैं, ज्यों नदियों में गंगा ॥ ५ ॥
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, नाचत बाल मुकंदा।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, काटो यम के फंदा ॥ ६ ॥

॥ विनय ॥

भगवान तुम्हारे मंदिर में मैं तुम्हें रिझाने आया हूँ।
वाणी में तनिक मिठास नहीं पर विनय सुनाने आया हूँ ॥ १ ॥
प्रभुका चरणामृत लेनेको, है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आँखों के दोनों प्यालों में कुछ भीख मांगने आया हूँ ॥ २ ॥
तुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान आपके चरणों में।
मैं भिक्षुक हूँ तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आया हूँ ॥ ३ ॥
सेवा को वस्तु नहीं कोई फिर मेरा हृदय देख लेना।
रो रोकर आज आँसुओं का मैं हार चढ़ाने आया हूँ ॥ ४ ॥

[७]

श्री सत्यनारायणजी की स्तुति प्रारम्भ

(सुबह ५-३० बजे मंगल आरती पर भजन)

अब जागो गिरधारी मोहन, अब जागो बनवारी।
बछड़ा बछड़ी डीकण लाग्या, गैया आई सारी।
नन्द दुलारो दुहण लागो, दुहावन आई राधा प्यारी॥
कोई चतुर चौकी ले आई, कोई जल भर ल्याई झारी।
कोई अंगोछो दातन ल्याई दरपन ल्याई राधा प्यारी॥
ग्वाल वाल सब द्वारे ठाढ़े, चौकीदार तुम्हारे।
'सूरदास' धन-धन री यशोदा, चरण कमल बलिहारी॥
अब जागो गिरधारी मोहन, अब जागो बनवारी॥

(८)

तेरी भी बन जायगी गोपाल गुन गाये से॥ टेक॥
मेरी भी बन जायगी, गोविन्द गुन गाये से॥

ध्रुव की बन गई, प्रह्लादहू की बन गई।
भिलनी की बन गई झूठे बैर खिलाये से॥१॥

गज की बन गई, ग्राह की बन गई।
गोपियों की बन गई प्रेम के लगाये से॥२॥

कौरवों की बन गई, पांडवों की बन गई।
द्रौपदी की बन गई चीर के बढ़ाये से॥३॥

राँका की बन गई वाँका की बन गई।
गणिका की बन गई, सुवा के पढ़ाये से॥४॥

मीरा की बन गई, सूरा की बन गई।
तुलसी की बन गई राम गुन गाये से॥५॥

(६)

मंगला आरती

पहली आरती गजानन की गौरी पुत्र गनेश,
सवा मण को करे कलेवा मोदक को प्रसाद ॥
मोय दर्शन देना जन्म सुधारें मंगला आरती,
हृदय में राखो काया सुधारे मंगला आरती ॥१॥
दूजी आरती बाल कृष्ण की गायारो ग्वाल,
वन-बन गऊ चरावत गल बैजन्तीमाला ॥२॥ मोय दर्शन०
तीजी आरती जगन्नाथ की लगे छतीसूँ भोग,
तुलसी ले चरणामृत लेस्यां कटे छतीसूँ दोष ॥३॥ मोय दर्शन०
चौथी आरती रामेश्वर की शोभा बरणी न जाय,
रामेश्वरजी के देवर चौवीस कुण्ड को नाहण ॥
सोना को सींणगार फूलों को सींणगार ॥४॥ मोय दर्शन०
पाँची आरती बद्रीविशाल की आप वृज के मांय,
बद्रीविशालके पहाड़ पर चढ़ता थर-थर कांप शरीर ॥
दाल मिश्री को भोग जी ॥५॥ मोय दर्शन०
छठी आरती सांवरा सेठ की शोभा बरणी न जाय,
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे गल हीरा को हार ॥
वाम अंग लक्ष्मीजी विराजें लागै छतीसो भोग ॥६॥ मोय दर्शन०
साती आरती सत्यभगवान की पेड़ा को प्रसाद,
वाम अंग लक्ष्मीजी विराजे गहणां रतन जड़ाव ॥
फूलां को सींणगारजी ॥७॥ मोय दर्शन०

आठी आरती काली माता की पेडा को प्रसाद,
काली माई के देवरे पण्डा करे पुकार ।।
करसी वेडा पारजी ।।८।। मोय दर्शन० ।।

नौवी आरती राणी सती की आप झुंझनू मांय,
सेवक करे पुकार देसी सर्व सुहाग जी ।।
करसी वेडा पारजी ।।९।। मोय दर्शन० ।

दसवीं आरती लक्ष्मीनारायणजी की दूध रवड़ी को भोग,
वाम अंग लक्ष्मोजी वीराजे गहणां रतन जड़ाव ।।
पेड़ा को प्रसादजी ।।१०।। मोय दर्शन० ।

ग्यारहवीं आरती वैकुण्ठनाथ की शेष नाग की बहार ।
श्रीदेवी और लीला देवी दोनु तरफ में विराजे ।।
सोना को सींणगारजी हीरां को जड़ाव ।
दूध रबड़ी को भोगजी ।।११।। मोय दर्शन० ।

वारहवीं आरती रामचन्द्रजी की शोभा वरणी न जाय ।
बाम अंग सीताजी विराजे दहिने अंग लीछमन भाई ।।
चरणां मै हनुमानजी बिराजे फूलां को सींणगार ।।
गहणां रतन जड़ाव पेड़ा को प्रसादजी ।।१२।। मोय दर्शन० ।

तेरहवीं आरती भूतनाथ की आप समसाना मांय,
बाम अंग पार्वती बिराजे नंदीश्वर असवार ।।
पेड़ा को प्रसादजी ।।१३।। मोय दर्शन० ।

(१०)

।। मोहन को कलेवो ।।

(तर्ज म्हारे राजेन भांग प्यावोजी)

टेर—भोर भई रे लाला होयो रे सवेरो जी ।
गिरधर उठोना करोना कलेवो ।। म्हारा मोहनलाल जागो जी
ठंडी तो रोटी र लाला दही को सबड़ को जी ।
गिरधर यो ल्योना कलेवो ।। म्हारा मोहनलाल जागो जी
ठण्डी तो रोटी माता मोय नहि भावे जी ।
म्हान गइया को दुधो मिठो लागे ।
मेरी मात यशोदा जी । म्हारा मोहनलाल जागोजी
पूतां से छानो र लाला कोई नहीं राखे जी ।
गिरधर क्यांन थे छाने छाती बालो । म्हारा मोहनलाल
झूठी तो निंद्रा माता मोय ना सुहावे जी ।
म्हें तो दूध र बूरा खावां मेरी मात यशोदाजी,
बाहर से बाबा नन्द जी भी आयोजी,
म्हारे लाला ने कुण रूसायो । म्हारा मोहनलाल
सारी व्रज को र लाला दूध मंगाद्यू जी ।
ऊपर बूरा बुरकावां । म्हारा मोहनलाल जागो जी
गाय दूहाद्यूं रे लाला भैंस दुहाऊँ जी ।
क्याने थे राम रोल मचाई । म्हारा मोहनलाल
भाज दौड़ कान्हो माता कन आयो जी ।
माता र चरणां शीश नवायो । म्हारा मोहनलाल
थे युग जीवो म्हारा कुंवर कन्हाई जी ।
बाबा नन्दजीरो वंश वढायो । म्हारा मोहनलाल

(११)

(नागलीला)

गेन्द के संग कूदत वालक जल जमना पर ध्याय के।
नाग नाथन करत लीला हरि उठ्यो झुन्झलाय के॥
कुन दिशा से आयो र बालक के तुम्हारो नाम है,
कुन राजा घर पुत्र कहावो कुन तुम्हारो गाँव है।
उत्तर दिशा से आयो ए नागन गोकल हमारा गाँव है,
मात यशोदा पिता नन्दजी श्रीकृष्ण हमारो नाम है।
के तू रे बाला मार्ग भूल्यो बाट भूल्यो के घर नार सताइयो,
के तेर मन में क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयो।
ना तो रे नागन मार्ग भूल्यो वाट भूल्यो ना घर नार सताइयो।
मात जसोदा दही तो बिलोवे नेतो तो मांगे वासिग नाग को
ना मेरे मन में क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयो।
देस्यूं रे गल को हार लाला, फूलमाला सवा करोड़ की डोरिया,
(मूनड़ो)
इतनो तो ले घर जावो रे बालक तू तेरी मा के एकलो।
नहीं लेऊँ गल हार माला, फूल माला सवा करोड़ की डोरिया,
नागन नाग जगायदे जुद्ध करूँगो वासिग नाग से
वृन्दावन में घालूं हिन्डोलों बांटू नाग की डोरिया।
हरि का किशन मुख देख नागन जावो र बालक भाग के,
थारो रूप देख्यां दया रे उपजे नाग मारे जाग के।
भाग्या कुल के दाग लागे अपभागी कैसे बनूं,
होणी होयसों होवे र नागन नाग तो नाथ्यो बनूं।

चौसठ चम्प करोड़ नागन गुंठलो मोड़ जगाइयो,
उठो ए बलवन्त योधा बालक नाथन आइयो।
जद उठे जल के तो राजा इन्द्र ज्यूं धररायो,
हरि के मुकुट पर मारी झपटो श्री कृष्ण तो संवलाययों।
जोधा हि जोधा युद्ध करो श्री कृष्ण योद्धा जीतियो,
काली दह में नाग नाथ्यो मथुरा में मल्ल पछाड़ियो।
व्याकुल होय के बोली र नागन सुनो नाथ मेरी बीनती,
यो चुड़लो प्रभु अविचल राखो चरनां री वलिहार हूँ।
जावो हे नागन सर्व सुहागन कीड़ला रो कांई सुहाग हो;
यो चुड़लो थारो अविचल राखो चरना री वलिहार हो।
'चन्द्रसखि' भज बालकृष्ण छवि हरि आंवगा गवन निवार के,
तुलसीदास ब्राह्मण को गावे कंठ लिये लपटाय के।

(१२)

(सिंगार की आरती प्रातः ८ बजे)

प्रभु आओ सुन्दर श्याम हमारे हरिकीर्तन में।
आप भी आओ संग ब्रह्मा जी को लाओ॥
आकर सृष्टि रचाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आओ सुन्दर श्याम हमारे हरिकीर्तन में॥
प्रभु आकर दरश दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु चतुर्भुज रूप दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
प्रभु राधा कृष्ण रूप दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु सीताराम रूप दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में॥

प्रभु मोहिनी रूप दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आकर दरश दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आओ सुन्दर श्याम हमारे हरिकीर्तन में।
आप भी आओ सँग गोपियों को भी लाओ।
आकर छटा दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आप भी आओ संग शङ्कर जी को लाओ।
भंग के रंग रचाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आप भी आओ संत नारद जी को लाओ ॥
प्रभु आकर वंशी वैन बजाओ हमारे हरिकीर्तन में।
आप भी आओ संग ग्वाल-बाल को लाओ।
आकर खेल मचाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आप भी आओ संग भक्तों को लाओ ॥
आकर भक्ति बढ़ाओ हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आप भी आओ संग अर्जुन को लाओ ॥
प्रभु गीता ज्ञान सुनाओ हमारे हरिकीर्तन में।
आप भी आओ संग द्रौपदी को लाओ।
आकर चीर बढ़ाओ हमारे हरिकीर्तन में ॥
आप भी आओ संग लक्ष्मी जी को लाओ ॥
प्रभु आपका चरण दबाओ हमारे हरिकीर्तन में।
आप भी आओ संग नन्द बाबाजी को लाओ।

प्रभु आओ यशोदा जी की गोदी में ॥

ताजा माखन ताजा मिश्री आकर भोग लगाओ हमारे हरिकीर्तन में ।

हरि आप ही आय आरोगो हमारे हरिकीर्तन में ।

प्रभु छप्पन भोग आरोगो हमारे हरिकीर्तन में ।

प्रभु आप ही आचमन करो हमारे हरिकीर्तन में ।

प्रभु आप ही पान चबाओ हमारे हरिकीर्तन में ॥

(१३)

मोर मुकुट शिर छत्र बिराजै

कुण्डल की छवि न्यारी भला हो रामा कुण्डल की० ॥

हो हरि बिना मोरी हो प्रभु बिना मोरी

कौन खबर ले सावल साह गिरधारी हो, भरोसो भारी हो शरण तुम्हारी

हो सत्यनारायण बिना मोरी कौन खबर ले सावल साह गिरधारी

पंच रंग पाग केसरिया बागो, लटपट पाग केसरिया जामो ।

हिवड़े हार हजारी भला हो रामा गल बिच हार हजारी

हो हरि बिना मोरी हो प्रभु बिना मोरी हो कौन खबर ले सावल साह गिरधारी

वृन्दावन में धेनु चरावे वृन्दावन में गऊ चरावे

बंशी बजावै गिरवरधारी भला हो रामा मुरली बजावे छत्रधारी हो हरि०

'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल बलिहारी
भला हो रामा हरि के चरण बलिहारी ।। हो हरि बिना० ।।

(१४)

प्रातः समय उठि मंजन करके प्रेम सहित स्नान कराऊँ ।
धूप दीप तुलसी की माला धूप दीप पुष्पन की माला ।
वर्ण-वर्ण का पुष्प चढ़ाऊँ

शालिग्राम सुनो विनती मोरी, यो वरदान दया कर पाऊँ ।
आप विराजो प्रभु रत्न सिंहासन झालर संख मृदंग बजाऊँ ।।
एक बूंद चरणामृत लेकर एक बूंद पंचामृत लेकर
कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊँ

जो कुछ अहार मिले प्रभु मोको भोग लगाकर भोजन पाऊँ ।।
जो कुछ पाप कियो काया से जो कुछ पाप कियो मनस्या से
दे परिक्रमा शीश नवाऊँ ।

छप्पन भोग छत्तोसूं मेवा प्रेम सहित प्रभु आपको जिमाऊँ ।।
पनवाड़ो भक्तां न दीजो पनवाड़ो संतां न दीज्यो बैठे २
हरिगुण गाऊँ ।। शालिग्राम ।।

शरणागत मोहै भवसागर को यमके द्वारे साँवरा मैं नहीं जाऊ
'माधवदास' कहे कर जोड़े तुलसीदास आशा रघुबर की
हर्ष निरख प्रभु थारो गुण गाऊँ ।। शालिग्राम सुनो ।।

(१५)

श्री सत्यनारायण महाराज लाज राखो म्हारी ।
मैं हरि चरणों का दास शरण आयो थारी ॥
थारो मन्दिर बन्यो एक बहुत सुन्दर अति भारी ।
थारो दर्शन करने आवे नर और नारी ॥
थारे मोर मुकुट कानां बिच कुण्डल सोहे ।
थारे मुख पर मुरली मधुर-मधुर मन मोहे ॥
थारो वृन्दावन में रास रच्यो अति भारी ।
थारे चान्द सूरज की महिमा अपरम्पारी ॥
यश गावें 'नरसिंहदास' बीकानेर वालो ।
थारी युगल जोड़ी को मैं दासक दीनदयालू ॥

(१६)

जय लक्ष्मी रमणा प्रभु श्री लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी २ जनपातक हरणा ॥जय॥
रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे
नारद करत निराजन घण्टा ध्वनि बाजे ॥जय॥
प्रकट भये कलिकारण द्विज को दरस दियो
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो ॥जय॥
दुर्बल भील कठारो जिन पर कृपा करी
चन्द्रचूड एक राजा जिनकी विपत हरी ॥जय॥
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुती कीनी ॥जय॥

भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धस्यो
श्रद्धा धारण कीनी जिनको काज सस्यो ।।जय।।
ग्वाल बाल संग राजा बन में भक्ति करी
मनवांछित फल दीनों दीनदयाल हरी ।।जय।
चढ़त प्रसाद सवायो कदली - फल - मेवा
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा ।।जय।।
श्री सत्यनारायण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे ।
प्रभु जो सुन्दर गावे भणत 'शिवानन्द' स्वामी सुख सम्पति पावे
रामा उनके घर लक्ष्मी आवै रामा दुखदारिद जावै ।।जय।।

(१७)

दीनबन्धु दीनानाथ मेरी सुध लीजियो ।
श्री लक्ष्मीपति श्री महाराज श्री लक्ष्मीपति श्री भगवान ।।दीन।।
दास हूँ तिहारो प्रभु मैं चाकर हूँ तिहारो जी ।
आप मेरे मालिक प्रभुजी आप मेरे स्वामी प्रभुजी ।।
सेवा मोहे दीजिये चरणों की सेवा दीजिए ।
चरणों की भक्ति दीजियो ।। दीनबन्धु दीनानाथ श्री लक्ष्मी ।।
अरजी मेरो लीजियो प्रभुजी मरजी मोय दीजियो ।
आपके चरणों की सेवा आपके चरणों की भक्ति ।।
मोपर कृपा कीजियो मोपर दया कीजियो ।
दीनबन्धु दीनानाथ श्री लक्ष्मीपति श्री भगवान ।।
श्री लक्ष्मीपति श्री महाराज मेरी सुध लीजियो ।।दीन०।।

(१८)

महाप्रभु आरोगो नरसिंह दयानिधि आरोगो नरसिंह
नारद मुनि पनवाडो ल्यायो जल भर लाई श्री गंग ।।मा।।

छप्पन भोग छतीसों व्यंजन नाना विधि के अन्न ॥म॥
लक्ष्मीजी व्यंजन आप सुधारे मन में बहुत उमंग ॥म॥
भिलनी के बेर सुदामा के तन्दुल रुचि-रुचि भोग लगावे ॥म॥
दुर्योधन का मेवा त्याग्या साग विदुर घर खाया ॥म॥
शिव सनकादिक चँवर डुलावे गावे 'परमानन्द' ॥
महाप्रभु आरोगो नरसिंह दयानिधि आरोगो नरसिंह ॥म॥

(१६)

[शिव-पुष्पांजलि]

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र-हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि ॥
असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी-पत्रमुर्वी ॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥१॥ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं, वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशूनांपतिम् । वन्दे सूर्य-शशांकवन्हिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् , वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥ शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ॥ नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितम् सांकुशं वामभागे, नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥३॥

(२०)

(आरती गणेशजी की)

जय जय श्रीगणराज विद्या सुखदाता
धन्य आपका दर्शन मेरे चित्त धरता ॥१॥ जय०

हाथ लियो गुड़ लड्डू सो मुख धरता ॥
कण्ठ विशाल विराजत सुत गोरी हर का ॥२॥ जय०
हीरालाल कण्ठन बिच सोहे कुण्डल कान धरे ॥
त्रिशूल डमरू हाथ में मुख पानन बीड़ो ॥३॥ जय०
रिद्ध सिद्ध के दाता संकट को वैरी ॥
बिघन बिलोचन नासक मुखिया बजरंगी ॥४॥ जय०
कासी में एक नन्दो ब्रह्मचारी ॥
नित उठ भोग लगावत शिवजी के दर्शन पावत
महिमा अति भारी ॥५॥ जय०

(२१)

(आरती शंकरजी की)

शीश गंग अर्द्धङ्ग पार्वती सदा विराजत कैलाशी ।
नन्दी भृङ्गी नृत्य करत है गुण भक्तन शिव की दासी ॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहे जहाँ बैठे हैं शिव अविनासी ।
करत गान गन्धर्व सप्तसुर राग रागिनी अति गासी ।
यक्ष रक्ष भैरव जहं डोलत बोलत हैं बन के बासी ॥
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भँवर करत हैं गुँजासी ।
कल्पवृक्ष अरु पारिजात तरु लाग रहे हैं लक्षासी ॥
कामधेनु कोटिक जहं डोलत करत फिरत हैं भिक्षासी ।
सूर्यकान्त सम पर्वत सोहे चन्द्र कान्त भव के वासी ॥
छऊं तो ऋतु नित फलत रहत है पुष्प चढ़त हैं बर्षासी ।
देवमुनी जनकी भीर पड़त है निगम रहत जो नितगासी ॥

ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान करत है कुछ शिव हमको फरमासी ।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर सदा आनन्दित सुख रासी ॥
जिनको सुमिरन सेवा करतां छूट जाय यम की फाँसी ।
त्रिशूल धरजीको ध्यान निरन्तर मन लगायकर जो गासी ।
दूर करो विपदा शिव मनकी जन्म जन्म शिवपद पासी ॥
कैलाशी काशी के वासी अविनासी मेरी सुध लीजो ।
सेवक जान सदा चरणन को अपनो जान कृपा कीजो ॥
आपतो प्रभुजी सदा सयाने बाबा अवगुण मेरा सब ढकियो ।
सब अपराध क्षमा कर शंकर किंकरकी विनती सुनियो ॥
अभयदान दीजो प्रभु मोको सकल सृष्टि के हितकारी ।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन भवभञ्जन भवदुखहारी ॥
काल हरो हर कष्ट हरो हर दुख हरो दारिद्र हरो ।
नमामि शङ्कर भवानी शङ्कर हरिहर शङ्कर ॐ शरणम् ॥

(२२)

आरती जय शिव ओंकारा

ॐ जै शिव ओंकारा हर भज शिव ओंकारा शिव पार्वती प्यारा, शिव ऊपर जलधारा, शिव ओढ़त मृगछाला शिव पीवत भंगप्याला, शिवरहते मतवाला, जैशिव ओंकारा, हो पार्वती प्यारा, हो शिव ऊपर जलधारा । ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा ॥१॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥टेक॥ एकानन चतुरानन पंचानन राजै । हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ॥२॥ ॐ हर हर० ॥ दोय भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै । तीनों

रूप निरखता त्रिभुवनजन मोहै ॥३॥ ॐ हर हर हर० ॥ अक्ष माला वनमाला रुण्डमाला धारी। चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥४॥ ॐ हर हर हर० ॥ नन्दीवाहन खगवाहन शिव-चक्र त्रिशूलधारी ॥ त्रिपुरारी, मुरारी, खड्ग कमंडलधारी ॐ हर हर० ॥ श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। सनकादिक प्रभुता-दिक भूतादिक संगे ॥५॥ ओं हर हर० ॥ लक्ष्मीवर गायत्री पार्वती संगे अर्द्धाङ्गे गायत्री शिवभोला सङ्गे बाघम्बर आसनपर कमला ओर संगे ॥६॥ ओं हर हर० ॥ करमध्येर कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता जगकर्त्ता जगहर्त्ता जगपालनकर्त्ता ॥७॥ ओं हर हर० ॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणव अक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥८॥ ओं हर हर० ॥ त्रिगुण स्वामी की आरति जो कोई नर गावे। भनत 'शिवानन्द' स्वामी मनवांछित फल पावे ॥८॥ ओं हर हर० ॥ जै शिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा हो मन रट शिव ओंकारा, हो शिव गल रुण्डमाला, हो शिव ओढ़त मृगछाला हो शिव पीते भंगप्याला, हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पार्वती प्यारा, हो ऊपर जलधारा। ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गीधारा ॥६॥ ओं हर हरहर महादेव ॥

(२३)

भोलानाथ अमली म्हारा शङ्कर अमली। म्हारा दीनानाथ अमली। जटाधारी अमली। बगिया में भंगियाबुआय राखूंगी। सोनार कटोरे विजया छाण राखूंगी।

कांई बोऊँ काशीजी में कांई जी प्रयाग।

कांई बोऊँ हर की पैडी कांई जी कैलास॥ (भोलानाथ)

काशीजी में केसर बोऊँ चन्दन प्रयाग।
हरकी पैड़ी विजया बोऊँ धत्तूरो कैलास ॥ (भोलानाथ)
प्रजा मांगे अन-धन राजा मांगे रूप।
कुष्टी मांगे निर्मल काया बाँझ मागे पूत ॥ (भोलानाथ)
प्रजा देस्यां अनधन राजा देस्यां रूप।
कुष्टी देस्यां निरमल काया बांझ देस्यां पूत ॥ (भोलानाथ)
कांई मांगे नांदियो जी कांई जी गणेश।
कांई मांगे भोला शम्भू जोगिया को भेष ॥ (भोलानाथ)
दूर्वा मांगे नादियो जी मोदक गणेश।
विजिया मांगे भोला शम्भू जोगिया को भेष ॥ (भोलानाथ)
घोटे-घोटे नांदियो जी छाणत गणेश।
भर भर प्याला देवे गोरजा पीवो जी महेश। (भोलानाथ)
नाचे नाचे नांदियों जी नाचे रे गणेश।
नाचे म्हारा भोला शम्भू जोगिया को भेष ॥ (भोलानाथ)
आकड़ा की रोटी पोऊँ धत्त्रे को साग।
विजिया की तरकारी छिमकूँ जीमो भोलानाथ ॥ (भोलानाथ)
आगे आगे नांदियों चाले लारा जी गणेश।
बीच बीच दुर्गा चाले जोगिया को भेष ॥ (भोलानाथ)
कैलाश पर्वत तप महादेव नांदियों चेलौ साथ।
'मनालाल' ब्राह्मण को जायो वैकुण्ठां में वास ॥ (भोलानाथ)

(२४)

शिव मानसिक पूजन

इष्टदेव त्रिपुरारी मेरा इष्टदेव त्रिपुरारी ॥टेक॥

उमासहित चरणारविन्द की पूजन करूँ संवारी ।।टेक।।
अर्घादिक स्नान कराऊँ पय दधि घृत शर्करा लाऊँ
पंचभूत अभिषेक चढ़ाऊँ। ब्रह्म सूत्र पटनारी।
मेरा इष्टदेव त्रिपुरारी ।।
उमासहित चरणारविन्द की पूजन करूँ संवारी० ।।१।।
गन्धाक्षत पुष्पन की माला दूर्वा बिल्व दीप उजियाला।
धूप और नैवेद्य रसाला एला लवंग सुपारी मेरी०। उमा० ।।२।।
ले कपूर आरती करता प्रदक्षिणा कर चरणन पड़ता।
स्तोत्र पाठ मुख से उच्चरता घण्टानाद प्रचारी ।।मे०।। उ० ।।३।।
पूङ्गी वीणा और मृदङ्ग बजाऊँ नृत्य सहित प्रभु के गुण गाऊँ।
कह "हरिलाल" अगम्बर पाऊ हो प्रसन्न नरनारी।
मेरा इष्टदेव त्रिपुरारी ।।
उमासहित चरणारविन्द की पूजन करूँ संवारी ।।४।।

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै "न" काराय नमः शिवाय ।।१।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै "म" काराय नमःशिवाय ।।२।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै "शि" काराय नमः शिवाय ।।३।।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै "व" काराय नमः शिवाय ।।४।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै "य" काराय नमः शिवाय ॥५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

(२५)

श्रीशिवरामाष्टकस्तोत्रम्

शिव हरे शिवराम सखे प्रभो त्रिविधतापनिवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥१॥
कमललोचन राम दयानिधे हर गुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भवशंकर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥२॥
सुजनरंजन मङ्गलमन्दिरं भजति ते पुरुषः परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥३॥
जय युधिष्ठिरवल्लभ भूपते जय जयार्जित पुण्यपयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तुते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥४॥
भव विमोचन माधव मापते सुकविमानसहंस शिवारते।
जनकराजत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥५॥
अवनिमंडलमङ्गल मापते जलदसुन्दर राम रमापते।
निगमकीर्तिगुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥६॥
पतितपावननाममयी लता तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥७॥
अमरतापर देव रमापते विजयतस्तव नामधनोपमा।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥८॥

हनुमतः प्रिय चापकर प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।९।
अहरहर्जनरञ्जनसुन्दरं पठति यः शिवरामकृतं स्तवम्।
विशति रामरमाचणाम्बुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।१०।
प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेकाग्रमानसः
विजयो जायते तस्य विष्णुमाराध्यमाप्नुयात् ॥११॥

(२६)

आरती जय अम्बे गौरी (१)

जै अम्वे गौरी मैया जै मंगलमूर्ति मैया जै आनन्दकरनी॥ तुमको निश दिन ध्यावत हर ब्रह्मा शिवरी॥ टेक॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको-मृगमद को उज्ज्वल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको ॥ जै अम्वे॥ १॥ कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै॥ रक्तपुष्प गल माला कण्ठन पर साजै॥ जै अम्वे॥ २॥ केहरिवाहन राजत खड्ग खप्रधारी॥ सुरनर मुनि जन-सेवत तिनके दुखहारी॥ जै अम्वे॥ ३॥ कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती॥ कोटिकचन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥ जै अम्वे०॥ ४॥ शुभ निशुम्भ विडारे महिषासुर-घाती॥ धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती॥ जै अम्वे॥ ५॥ चौसठ योगिनी गावत नृत्यकरत भैरूँ॥ बाजत ताल मृदङ्गा और बाजत डमरू। जै अ०॥६॥ भुजा चार अति शोभित खड्ग-खप्रधारी मन वांछित फल पावत सेवत नर नारी। जै अम्वे॥७॥ कंचन थाल बिराजत अगर कपर बाती श्रीमालकेतुमें राजत कोटि रतन

ज्योति। जै अम्बे० ॥८॥ दोहा ॥ या अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे भणत 'शिवानन्द' स्वामी, सुख संपति पावे ॥जै अ०॥

(२७)

आरती श्रीदुर्गाजी की (२)

मगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा खोपरा ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥
सुन जगदम्बे न कर विलम्बे सन्तन का भण्डार भरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली मैया जयकाली कल्याण करे॥
बुद्धि विधाता तू जग माता मेरा कारज सिद्ध करो॥
चरण कमलका लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परो॥ जब-जब भीड़ पड़े भक्तन पर तब-तब आय सहाय करो॥ सन्तन०॥ बार-बार तैं सब जग मोह्यो तरुणी रूप अनूप धरे। माता होकर पुत्र खिलावे कहीं भारज्या भोग करे॥ सन्तन०॥ सन्तन सखदाई सदा सहाई सन्त खड़े जयकार करें। ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सब लिये भेंट तेरे द्वार खड़े। अटल सिंहासन बैठी मेरी माता सिर सोनेका छत्र फिरे॥ सन्तन०॥ बार शनीचर कूंकुम वरणों जब लूंकड़ पर हुकुम करे खड्गखप्पर त्रिशूल हाथ लिये रक्तबीजकूं भस्म करे। शुभ निशुम्भ को क्षण में मारा महिषासुरकूं पकड़दल्यो ॥ सन्तन०॥ आदितवार आदि को बरणे जन अपनेको कष्ट हरे, कोप होयकर दानव मारे चण्ड-मुण्ड सब चूर करे। जब तुम देखो दया रूप हो पल में संकट दूर करे॥ सन्तन०॥ सौम्य स्वभाव धर्‌यो मेरी माता जनकी अरज कबूल करे। सिंह पीठ पर

चढ़ी भवानी अटल भवन में राज्य करे। दर्शन पावैं मंगल गावे सिद्ध साधतेकी भेंट धरैं ॥ सन्तन० ॥ ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिवशंकरजी ध्यान धरे इन्द्र कृष्ण तरी करे आरती चंवर कुवेर डुलाय रहें। जय जननी जय मातु भवानी अटल भवन में राज्य करें ॥ सन्तन० ॥

[२८]

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि तेरा पार न पाया ॥टेर॥ पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तेरी भेट चढ़ायी ।सुन०१। सूवा चोला तेरे अंग विराजे केशर तिलक लगाया ॥ सुन० २ ॥ ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शङ्कर ध्यान लगाया ॥ सुन० ३॥ नंगे पग तेरे अकबर आया सोने का छत्र चढ़ा ॥सुन ४॥ ऊँचा २ पर्वत बनाया शिवाला नीचे शहर बसाया ॥सुन ५॥ कलियुग द्वापर त्रेता मध्य कलियुग राज बसाया ॥ सुन ६ ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया ॥सुन ७॥ धानू भगत मइया तेरा गुन गावे मनवांछित फल पाया ॥सुन ८॥

(२६)

श्रीलक्ष्मीजी की आरती

जय लक्ष्मी माता ॥ तुमको निशि दिन सेवत हरविष्णुधाता ॥टेक॥ ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तुहीं है जगमाता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषिगाता ॥ जय ॥ दुर्गारूप निरंजनि सुखसम्पतिदाता ॥ जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धिसिद्धि धन पाता ॥ जय० ॥ तूही है पाताल बसन्ती तूही है शुभ दाता। कर्म - प्रभाव - प्रकाशक जगनिधि से त्राता ॥ जय० ४ ॥ जिस घर थारो बासो जाहि में

गुण आता। करन सके सोई कर ले मन नहीं धड़काता ॥ जय० ४ ॥ तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता। खान-पान को बैभव तुम बिन कुण दाता ॥ जय० ५ ॥ शुभगुण सुन्दर-युक्ता क्षीरनिधि जाता। रत्न चतुर्दश तोकूं कोई भी नहीं पाता ॥ जय० ६ ॥ या आरती लक्ष्मी जी की जो कोई नर गाता। उर आनन्द अति उमंगे पाप उतर जाता ॥ जय० ७ ॥ स्थिर चर जगत बचावै कर्मप्रेर ल्याता। 'रामप्रताप' मैयाकी शुभ दृष्टि चाता ॥ जय० ८॥ तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता।

(३०)

॥ श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

॥ श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

॥ श्रीमद्भागवतजी की आरती ॥

श्रीभागोत मुगत की दाता जगत की माता
भवसागर की नौका है जी।
श्रीराम मिलन की नौका है जी श्रीकृष्ण
मिलन की नौका है जी ॥
ब्रह्माजी बीज दियो नारद को, नारद
वृक्ष लगायो है जी। श्री भाग०
वेदव्यासजी करि रे पालना, शुकदेवजी
प्रगट कीनी है जी श्रीभाग०
श्रीभागोतजी के द्वादस डाला तीनसौ पैंतीस अध्यायां है जी
अठारे हजार वांरी सांख्या कहिये ओरज पत्र
विशेषा है जी ॥ श्रीभाग०

पान पुष्प की गिनती नाहिं शुकदेवजी लेखो लीनो है जी
पान पान में अमृत बरसे मुनीयन के मन
भाई है जी ॥ श्रीभाग०
कहे राजा परीक्षित सुनो सुखदेव जी, यह कुण
प्रकट कीनी है जी
जिन वांची तीन मोय बतावो, फिर नहीं
पावो मौका है जी ॥ श्रीभाग०
कहे सुखदेव जी सुनो परीक्षित गंगा के घाट वंचाई हैजी
गऊकरण धुंधकारी कारण श्रीभागोत सुणाई हैजी
गीताको ज्ञान सुनायो हैजी ॥ श्रीभाग०
ज्ञान वैराग्य भगती के पुत्र जिनने प्रकट देखी है जी ।
सब मिलकर देई देवता पधारे रिषी मुनी
ध्यान लगायो है जी ॥ श्रीभाग०
काम क्रोध मद लोभ छोड़ दो । नहीं तो रवोगे रीता है जी ।
यहि जनम में पार ऊतर जावो भागवत ज्ञान
अनोखा है जी ॥ श्रीभाग०
बैठ विमान वैकुण्ठ पधारो फिर नहीं पावो मौका है जी ।
सुण कर राजा परीक्षित ध्यान लगायो सुणी है
सपता कथा जी ॥ श्रीभाग०
इठ्यासी हजार मुनियन के माहिं सुकदेवजी बांच सुणाई है जी ।
सात दिनां बिच मुकती पाई तुरन्त सिंहासन
आयो है जी ॥ श्रीभाग०

हाथ जोड़कर करी रे विनती चरणों में शीश नवाया है जी।
बैठ विमान वैकुण्ठ पधारिया पुष्पन मेह
बरसायो है जी ॥ श्रीभाग०
सुणी भागवत जो नर नारी वोहि वैकुण्ठ सिधावेगा जो ॥
कृपा करो श्री कृष्ण मुरारी हम भी भी पावां
मुकती है जी ॥ श्रीभाग०
श्रीभागोत मुक्त की दाता जगत की माता माता भवसागर
की नौका है जी
श्रीराम मिलन को नौका है जी कृष्णमिलन
की नौका है जी।

—०—

गंगा, गीता गायत्री, सीता सत्या, सरस्वती, ब्रह्मवला ब्रह्म-
विद्या, त्रिसन्ध्या, मुक्तिगेहिनी ॥
अर्धमात्रा, चिदानन्दा, भवघ्नी, भ्रान्तिनाशिनी, वेदत्रयी
परानन्दा और तत्त्वार्थ - ज्ञानमञ्जरी ।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

(३१)

श्रीबद्रीनाथजी की स्तुति

श्रीपवनमंदसुगन्धशीतल हेममन्दिरशोभितम् ।
श्री निकट गंगा बहत निर्मल श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥१॥
शेष सुमिरन करत निशिदिन धरत ध्यान महेश्वरम् ॥
वेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥२॥

इन्द्र चन्द्र कुवेर दिनकर धूप - दीप - प्रकाशितम् ।
सिद्ध मुनि जन करत जै जै श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥३॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम् ।
श्री लक्ष्मी कमला चँवर डोले श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥४॥
योग-ध्यान अपारलीला श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
शक्ति गौरी गणेश सारद नारद मुनिजन उच्चरम् ॥५॥
कैलाश में एक देव निरंजन शैलशिखर महेश्वरम् ।
श्रीराजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥६॥
श्रीबद्रीनाथ जी के पंचरत्न है पढ़त पाप विनाशनम् ।
कोटितीर्थभवं सुपुण्यं प्राप्तये फलदायकम् ॥७॥

(३२)

भगवान् के भोग की आरती

शाम को ७॥ बजे

आरती युगलकिशोर हर की कीजै,
राधे तन मन धन न्यौछावर कीजै ।
गौर श्याम मुख निरखत रीजै
प्रभु को रूप नयन भर पीजै ॥१॥ आ०
रवि शशि कोटि वदन हरि की शोभा,
हरख निरख मेरो मन भयो लोभा ॥२॥ आ०
कंचन थार कपूर की बाती,
हरि आये मेरो मन भयो राजी ॥३॥ आ०
मोर मुकुट हरि मुरली भी सोहे,
हरख निरख मेरो मन मोहे ॥४॥ आ०

फूलन की सेज फूलन गले माला,
रतन सिंहासन बैठे नन्दलाला ॥५॥ आ०
ओढ़े लाल पीत पट सारी,
कुँजविहारी गिरवरधारी ॥६॥ आ०
श्रीपुरुषोत्तम गिरवरधारी,
आरती करति सकल नरनारी ॥७॥ आ०
नन्द नन्दन वृष भानु किशोरी,
'परमानन्द' स्वामी अविचल जोरी ॥८॥ आ०
जो भक्ति से हरि की आरती गावे,
परमानन्द परमपद पावे ॥९॥ आ०

(३३)

हेरामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा, गोविन्दा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा । हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते, वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ॥१॥
आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं कांचनं वैदेहीहरणं जटायु-मरणं सग्रीवसंभाषणम् । बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरी-दाहनम् । पश्चाद्रावण-कुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥ २ ॥
आदौ देवकीदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम्, मायापूतन-जीवतापहननं गोवर्द्धनोद्धारणम् । कंशाच्छेदनकौरवादिहननम् कुन्तीसुतापालनम्, एतच्छ्रीमद्भागवतपुराण-कथितं श्रीकृष्ण-लीलामृतम् ॥ ३ ॥

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।

सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥ ४ ॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियम्
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतम्
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥ ५ ॥

हे गोपालक हे कृपाजलनिधे हे सिन्धुकन्यापते, हे कंसान्तक हेगजेन्द्रकरुणापारीण हे माधव। हे रामानुज हे जगत्त्रयगुरो हे पुण्डरीकाक्ष माम्, हे गोपीजननाथ पालय परं जानामि न त्वां विना ॥६॥ गोविन्द गोविन्द हरेमुरारे गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ ७ ॥ नमोनमः कारणवामनाय नारायणायामितविक्रमाय। श्रीशार्ङ्ग-चक्राब्जगदाधराय नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय ॥ ८ ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥९॥

(३४)

भूल मति हरि नाम एक सार
सांचे मन से ध्यान लगावे सो नर उतरे पार ॥
परम भक्त प्रह्लाद उबार्‍यो जिनकी करि सहाय ।
दूर करो विपदा हरि पल में धरि नरसिंह अवतार ॥
दुष्ट को दियो पलक में मार ॥१॥ ध्यान०॥

माता यसोदा पिता नन्द घर कृष्ण लियो अवतार ॥
सुआ पढ़ावत गणिका तारी गौतम ऋषि की नार ।
कंस को दियो पलक में मार ॥ २ ॥ ध्यान०॥
गजको भक्त विचार आप हरि गरुड़ छोड़कर धाए ।
विप्र सुदामा मित्र तुम्हारो, कञ्चन महल बनाये ।
हरि की महिमा अपरम्पार ॥ ३ ॥ ध्यान०॥

(३५)

सांवर बंशीवाला नंदलाला मतवाला गोकुल का उजियाला ।
कृष्ण-कृष्ण जप साँझ सकारे श्रीकृष्ण नाम सबके दुख टारे ॥
कृष्ण ही भवसागर से तारे पारलगानेवाला नंदलाला
कोई कहत है कृष्ण मुरारी कोई कहत है श्याम विहारी
कोई कहत नटवर गिरधारी जपते तुमरी माला नंदलाला ॥

(३६)

व्यालू ही लीजै भोजन कीजै । मोहनलाल व्यालू कीजै ॥गिरधर लाल ॥ घेवर पाक जलेबी लाडू । घेब०॥ मांग मांग यशोदाजी से लीजै माँग २ जननीजी से लीजै ॥ मोहनलाल व्यालू कीजै गिरधरलाल। खारक दाख बिदाम खोपरा ॥ ऊपर पापड़ फली हरि लीजै। मोहनलाल व्यालू कीजै गिरधरलाल ॥ काचर कर करेला और बथुआ को साग हरि लीजै ॥ मोहनलाल व्यालू कीजै गिरधरलाल। जोड़ मण्डली व्यालूही लीजै जोड़ मण्डली भोजन कीजै मोहनलाल शरण तो दीजै ॥ गिरधर लाल शरण तो दीजै। मोहनलाल व्यालू कीजै गिरधर लाल ॥
हे मोहन प्यारे मनमोहन प्यारे दूध पीओ मनमोहन प्यारे। हे

अच्छो नीको धोली धूमरको आछो नीको धोली० ॥ जामे घृत सीलैइया प्यारे जामे मधु मिलैईया प्यारे। दूध पियो मनमोहन प्यारे दूध पियो० ॥

(३७)

लीजै कृपानिधान मैं वारी रामा लीजै कृपानिधान। आचमन कीजै कृपानिधान ॥

ओ रामा पनवाडो भक्तन को दीजै पनवाडो संतनको दीजै नारद धरता ध्यान मैं वारी रामा नारद करता गान। आचमन कीजै कृपानिधान

ओ रामा गंगाजल झारी भर ल्याई ॥ जमुना ॥

ओ गंगा भरी रे सुजान मै वारी रामा यमुना भरी रे सुजान आचमन कीजै कृपानिधान ॥

ओ श्रीमद्‌जुगलहरि की आरती गावे दास 'सुजान'। आचमन कीजै कृपानिधान ॥

(३८)

हो बिड़ी लाऊँरी बनाय नगर पान की। हो बिड़ी०।

कथोरी चूनो लौंग सुपारी बिड़ी बनाऊँ नागर पान की।

थां पर वारी रामा प्रभु के चरण चित लाऊँरी ॥ हो० ॥

आओ ठाकुरजी आंपा चोरस खेला बाजी लगाऊँ हरि के नाम की।

मैं गंवारी रामा प्रभु के चरन चित लाऊँरी ॥ हो ॥

नन्द बाबा जी को कुंवर कन्हैयो मैं बेटी वृषभान की ॥

मैं वारी रामा प्रभु की चरण चित लाऊँरी ॥ हो० ॥

"चन्द्रसखी" भज बालकृष्ण छवि जोड़ी बनी है राधेश्याम को
मैं वारी रामा जोड़ी बनी हैं सीताराम की ॥ हो० ॥

(३६)

श्यामा जोई जो रे दर्शन दीजो रे सांवलसा
हरि की आरती हो प्रभु थारी आरती
हे वारी वारी देव गली में वासो करता कुञ्ज गली में रहता
हे चांद सूरज दोय दिवला करता ॥ चाँद० ॥
जगमग २ हो तारे साँवलसा हरि की आरती ॥हो०॥
हे वारी वारी बालमुकुन्द और पुरुषोत्तम की सेवा हरदम करस्यां
हे शालगरामजी रे शरणे रहस्यां भवसागर सूँ तरस्याँ रे
साँवलसा हरि कीं आरती हो प्रभु थारी आरती
वारी २ मोरमुकुट मकराकृतकुण्डल गल वैजन्तीमाला
हे जमुना के नीरा तीरे धनु चरावे ॥ जमुना के ॥
काली कम्बलवाला रे साँवलसा हरि की आरती ॥ हो ॥
हे वारी २ वृन्दावन की कुञ्जगली में मोहन वंशी बजावे
हे वारी २ वृन्दावन की कुञ्जगली में मोहन रास रचावे
हे गावे बजावे कान्हों जमुना न्हावे ॥ गावे ॥
"नरसी" रे मन भावें सांवलसा हरि की आरती ॥ हो प्रभु० ॥

(४०)

भली बनी छवि आपकी भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवे धनुष बाण ल्यो हाथ ॥
धनुषबाण धारो सदा अपने भक्तन के काज।
जब भक्तन पर भीर पड़ी तब सावधान महाराज ॥

कित मुरली कित चन्द्रिका कित गोपियन को साथ।
अपने भक्त के कारणे श्रीनाथ भये रघुनाथ ॥
मोर मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल।
एहि बानक मो मन बसो सदा विहारीलाल ॥

(४१)

श्रीमोरमुकुटवाले की जय। वंशीवटवाले की जय। श्रीरघुनाथजी महाराजकी जय। श्रीसत्यनारायण भगवान्की जय। श्रीलक्ष्मी माताकी जय। कृष्ण-बलदेवकी जय। साँवरे सेठकी जय। दाऊजी महाराज की जय। गिरिराजधरण की जय। महाप्रभुके लाड़लेकी जय। सनातनधर्म की जय। गौमाताकी जय। धरती माताकी जय। शेषावतार की जय। श्रीसत्यनारायण भगवान् की जय। श्रीलक्ष्मी माता की जय। बाबा भोलेनाथकी जय। माता पार्वती की जय। बावन भैरवोंकी जय। चौसठ योगिनियों की जय। छत्तीस धामों की जय। श्रीवेदव्यासजी महाराजकी जय। श्रीसुखदेवजी महाराज की जय। श्रीगंगा महारानीकी जय। श्रीजमुना महारानी की जय। तैंतीस करोड़ देवी देवताओं की जय। श्रीमहावीरस्वामी की जय। श्रीगौब्राह्मणोंकी जय। श्रीसत्यनारायण भगवान् की जय। श्रीलक्ष्मी माताकी जय। बोलो अटल छत्र की जय।

(४२)

इण कान्हा की बंशी म्हाने प्यारी लागे ए मा
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे गल वैजन्ती माला जी
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै काळी कम्बलवालो जी ॥इ०॥

पंख पखेरू सब उड़ी आये सुन मुरलीकी वाणी जी
मूसलधारा वर्षन लाग्यो हो गई रैन अन्धेरी जी ॥
गौ वछड़ा भीजै ए माय। इण कान्हा की वंशी०
आज व्रज पर इन्द्र कोप्यो वरसे मूसलधारा जी ॥
बायें नखपर गिरवर धार्‌यो ध्रुव प्रह्लाद उवार्‌योजी
ब्रह्मा, विष्णु खड़्या ए माय। इण कान्हा की० ॥
वृन्दावन में रास रच्यो है सब मिलके नरनारी जी
'चन्द्रसखी' भज वालकृष्ण छवि तन, मन ऊपरवारी जी
वाँके चरणन की वलिहारी ए मा ॥ इण कान्हा की० ॥

(४३)

दो मिल प्रोढ़े प्रभुजी मन्दिर माँय हरिजी मन्दिर माँय रतन जड़ित को बण्यो है ढोलियो रेशम बण्यों छै वाण ॥ रे० ॥ दोऊ मिल पोढ़े प्रभु जी मंदिर माँय हरि जी मंदिर माँय दास पद्म प्रभु चाकर थारो निश्चय तुमरो छै ध्यान ॥ नि० ॥ हे गोवर्धनजी की रहिये गोवर्धनजी की रहिये। तैलरी श्री गोवर्धनजीकी रहिये गोवर्धनजी की रहिये। नित्यप्रति मदनगोपाललाल चरण चित्त धरिये ॥ च० ॥ धन झूलत प्रभु रेशम हिन्डोले गोविन्द गुण मन भजिये। रसिक प्रीतम संग हितकी सो वतिया। श्री गोवर्धन जी से कहिये गोवर्धन जी से कहिये २। तैलरी श्री गोवर्धनजी की रहिये लक्ष्मी नाथजी की रहिये श्री संत बाबाजी की रहिये गोवर्धन जी की तैलरी गोवर्धन जी की रहिये।

(४४)

ओ बंशीवालेने घणीं खम्मा। खम्मा ओ मोत्याँवालाने घणी खम्मा। बिलमायो राख्यो रात रे बंशीवाले ने घणी खम्मा। खम्माओ मोत्याँवालाने घणी खम्मा ओ रामा रङ्गीली पीताम्बर म्हासु अड़ी रे मचावे कुण्डल रास रमा। ओ रामा मोरमुकुट पीताम्बर सोहै कुण्डल की रमा झमा। आपही जाये द्वारकामें बैठ बनकर रास रमा। 'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि बार-बार थानेनमा। एजी बार बार थाने नमा नमा ओ बंशीवालेने घणी खम्मा। खम्मा ओ मोत्याँबालेने घणा खम्मा। खम्माओ सतबाबा ने घणी खम्मा। खम्मा ओ माजी साहेबा ने घणी खम्मा। खम्मा ओ भोलेनाथ जी ने घणी खम्मा। खम्मा ओ गजानन्द जी ने घणीं खम्मा। खम्मा ओ महावीर जी ने घणीं खम्मा। खम्मा ओ माता पारवती ने घणी खम्मा। खम्मा ओ सूरज बाबाजी ने घणी खम्मा। खम्मा ओ सत बाबाजी ने घणी खम्मा। खम्मा ओ माजी साहेबा ने घणी खम्मा। बिलमायो राख्यो रात रे बंशी वाले ने घणी खम्मा। खम्मा ओ मोत्यांवाले ने घणी खम्मा।

(४५)

शरण में आये हैं हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन्।
सम्हालो बिगड़ी दशा हमारी दया करो हे दयालु भगवन्॥टेक॥
न हममें बल है न हम में शक्ति न हममें साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारी दर के हम हैं भिखारी दया करो हे दयालु भगवन्॥१॥
जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक जो तुम हो स्वामी तो
हम हैं सेवक।

जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन् ॥२॥
सुना है हम अंश हैं तुम्हारे, तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे।
यह है तो तुमने क्यों सुधि बिसारी दया करो हे द० भ० ॥३॥
बुरे जो हैं हम तो हैं तुम्हारे, भले जो हैं हम तो तुम्हारे॥
तुम्हारे होकर हैं हम दुःखारी दया करो हे दयालु भगवन् ॥४॥
प्रदान कर दो महान् शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे पापहारी दया करो हे दयालु भगवन् ॥५॥
न होगी जबतक कृपा की वृष्टि न होगी तवतक दया की दृष्टि
न तुम भी तबतक हो न्यायकारी, दया करो हे दयालु भगवन् ॥६॥
हमें तो इक टेक नाम की है, पुकार यह "राधेश्याम" की है।
तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी, दया करो हे दयालु भगवन्।

(४६)

जग झूठा सारा सांईयाँ देख क्यों ललचाया। संग संगाती सुख के साथी झूठी ममता माया, माया रे माया बच बच के चलना पाप से मोह जाल बिछाया। बेटा बेटी कुटुम्ब कबीला सुपने की सी छाया। छाया रे छाया बच २ के चलना पाप से मोहजाल बिछाया। माटी में मिल जायगी एक दिन तेरी कंचन काया। काया रे काया। बच बच के०। लख चौरासी भ्रमत २ यह मानस तन पाया। पाया रे पाया बच बच के०।

(४७)

राम धुन लागी अब नहीं छुटेगी। गोपाल धुन लागी अब नहीं छुटेगी। प्रभु तेरो चन्दन मैं पानी जाँकी वास मोरे अङ्ग २ में समाई ॥ राम॥ प्रभु मेरो मोती मैं धागा जेहि मिला सोने सुहागा

॥ राम ॥ प्रभु मोरो दीपक मैं बाती जाँकी ज्योति जले दिन राती ॥ राम ॥ प्रभु मोरे वन में जेहि मिले मधुबन चकोरा ॥ प्रभु मोरे स्वामी दास जाँकी भक्ति देवो दिनराती ॥राम॥

(४८)

देख तेरे ही मन मन्दिर में बसा हुआ भगवान् ।
अरे तू कर उससे पहचान ॥
है घट घट में वास उसी का,
सूरज बीच प्रकास उसी का,
है सब के सिर हाथ उसी का
जीवन में है साथ उसी का
भूल उसे क्यों भटक रहा है ।
डगर २ नादान ! अरे—
चेत अरे ! माया के अन्धे ।
डाल रहा यम सिर पै फन्दे ॥
हरिचरणों में आ जा वन्दे ।
तज दे जग के झूठे धन्धे ॥
हो जायगा राम नाम ले सब मुश्किल आसान ।
अब तो आवागमन मिटा ले ।
मानव जीवन सफल बना ले ।
ज्ञान गंग में आज नहा ले ।
ब्रह्म ज्योति से ज्योति जला ले ।
'रामेश्वर' तू गुरु कृपा से पावे पद निर्वान ॥

(४६)

नर तन मिला जगत में, हरिगुण गाने के लिये।
भजन करो भवसिन्धु पार तर जाने के लिए ॥टेर॥
परम पिता परमेश्वर के गुण, गाने में कल्याण है।
झूठे जग के बन्धन में फँस जाना ही नुकसान॥
छोड़ वृथा अभिमान अमर पद पाने के लिए ॥१॥
मोह जाल विषयों में फँसकर राम नाम को छोड़ दिया
नर तन पाय जगत में तूने, हरि से नातां तोड़ लिया॥
काम क्रोध मद लोभ छोड़ सुख पाने के लिए ॥२॥
बार बार इस दुनिया में आने से बचना चाहिए
जठर वेदना से छुटकारा, पाना तुमको चाहिए॥
दूर भाग अज्ञान मोक्ष तर जाने के लिए ॥३॥
नहीं तो समय चूक जाएगा, प्रेमसे हरि गुण गान करो।
राम राम गुण गाकर 'लक्ष्मण' जीवनका कल्याण करो।
हरिगुण गाओ जनम मरण छुट जाने के लिए ॥४॥

(५०)

ईश्वर दीनदयाला है

जय जय हरिहर गौरी शंकर ईश्वर दीनदयाला है।
राम नाम में समय बिताना सच्चा धर्म हमारा है।
हरि भजन में चित्त लगाना, सच्चा धर्म हमारा है।
सुबह शाम दिन रात जपें तब ही कल्याण हमारा है।
कैलासी काशी के वासी, भोला डमरूवाला है ॥जय०॥

जटा जूट में गंग विराजे, शीश चन्द्रमा न्यारा है।
गले बीच लिपटे हैं विषधर, कानन कुण्डल वाला है ॥जय॥
नाव पड़ी मझधार बीच में ना दीखत किनारा है।
भोलानाथ महेश्वर शम्भु पार लगाने वाला है ॥जय०॥
अलख निरञ्जन भवदुखभञ्जन, भक्तोंके प्रतिपाला है।
जो ध्यावे इच्छा फल पावे पल में करत निहाला है ॥जय०॥
नैन खोलकर देखो मनुआँ जगमें कौन तुम्हारा है।
भजन किये भवबन्धन टूटे छूटै सब संसारा है।
जय जय हरिहर गौरीशंकर ईश्वर दीनदयाला है ॥

(५१)

आरती जगदीशजी की

ॐ जय जगदीश हरे प्रभु, जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ॐ जय जगदीश हरे ॥
जो ध्यावे फल पावे दुख विनसे मन का प्रभु दुःख विनसे मनका।
सुखसम्पत्तिं घर आवै कष्ट मिटै तनका ॐ जय जगदीश हरे ॥
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी प्रभु शरणागहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ किसकी ॐ जय जगदीश हरे ॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी प्रभु तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॐ जय जगदीश हरे ॥
तुम करुणाके सागर तुम पालन करता प्रभु तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॐ जय जगदीश हरे ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति प्रभु सबके जगतपति।
किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति ॐ जय जगदीश हरे ॥

दीनबन्धु दुःख हरता तुम रक्षक मेरे प्रभु तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॐ जय जगदीश हरे॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा प्रभु पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति वढ़ाओ सन्तन की सेवा ॐ जय जगदीश हरे॥
प्रेम सभाजन तुमको निशिदिन ध्यावे हम सबदिन ही ध्यावे।
पार लगाओ नैया यही अचरज आवे ॐ जय जगदीश हरे॥

(५२)

श्रीचारभुजा मेडतेवाले का भजन

श्रीचारभुजा महाराज मेड़तारा वासी।
द्वारकावासी कलकत्ते का वासी चिराणा का वासी
मेरी इतनी अरज सुन नाथ काट जम फाँसी॥ टेक॥
थारो गौर बदन है रूप भुजा है चारी।
थारे शंख चक्र गदा पद्म विराजे न्यारी॥
श्रीचारभुजा महाराज मेडता का वासी।
द्वारकावासी कलकत्ते का वासी। चिराणाका वासी
मेरी इतनी अरज सुन नाथ काट जम फाँसी॥
थारो जरकस जामो सोहे जी गले बीच मोती॥
थारे तुरला प्यार हजारक जगमग ज्योति।
श्रीचारभुजा महाराज मेडता का वासी॥
मेरी इतनी अरज सुन नाथ काट जम फाँसी
थारे मोर मुकुट के बीच जड़ाऊँ हीरा
थारे गल वैजन्ती मुख में वीड़ा। श्रीचारभुजा।
थारे केशर तिलक लिलाट कुण्डल थाने साजे।

थारे मुख की ये शोभा देख चन्द्रमा लाजे । श्रीचारभुजा ॥
थारे लड्डू जलेबी को भोग कलाकन्द साधे ।
थारे दूध रबड़ी को भोग ठाकुर जी लागे ॥ श्रीचारभुजा ॥
पंडत को लडकौ चन्द्र रागिनी गावे सुनो तो नर नारी ॥
मैं हित चित सेवा करूंजी ठाकुर जी थारी ॥ श्रीचारभुजा ॥
थारे शिव सनकादिक नारद बीणा बजावे ।
थारी इन्द्र करे जय जयकार अप्सरा गावे ॥ श्रीचारभुजा ॥

(५३)

॥ श्री ॥

मैं तो दरख्वाश्त नाथ देती हूँ तुम्हारे पास ।
द्वारका का नाथ मेरी अर्जी सुन लीजिये ॥
लक्ष्मीनारायण मेरी अर्जी सुन लीजिये ।
दीनबन्धु दीनानाथ मेरी अर्जी सुन लीजिये ॥
गोपियां का नाथ मेरी अर्जी सुन लीजिये ।
कर्मा का फन्दा से मैं पड़ी जेलखाना में ॥
पाँवों पड़ी बेड़ी नाथ आप काट दीजिये ॥ द्वारका० ॥
पाँच चपरासी मुझे घेरया दिन रैन मैं ।
काम क्रोध लोभ मोह आप हर लीजिये ॥ द्वारका० ॥
मैं हूँ गरीब नाथ अटेली करेगो कौन ।
भक्ति मेरे पास आप कृपा कर दीजिये ॥ द्वारका० ॥
हारूं तो हजार गुनाह माफ कर दीजिये ।
जीतूं तो जुगल जोड़ी चरण में लीजिये ॥ द्वारका० ॥

भाई नहीं बन्धु कुटुम्ब कबीलो नहीं ॥
ऐसो कोई मित्र नहीं जिन जाकर जाँचिवे ।
आप सरीसो सेठ नहीं जाकर जाँचिवे ॥ द्वारका० ॥
चाकरी को चाव नहीं खेती को उपाय नहीं ॥
कहता मैं "मुल्कनाथ" छोड़ दे पराई आस ॥
छोटी सी नावड़िया मेरी पार लगायदे ॥ द्वारका० ॥

(५४)

द्रौपदी की पुकार

लावणी

विन काज आज महाराज लाज गई मेरी
दुख हरो द्वारकानाथ शरण में तेरी ॥ टेक ॥
दुस्सासन वंश कुठार महादुखदाई ।
कर पकरत मेरो चीर लाज नहीं आई ॥
अब हुआ धरम का नाश पाप रह्यो छाई ॥
लखि अधम सभा की ओर नारी बिलखाई ॥
शकुनी दुर्योधन कर्ण खड़े खल घेरी ॥ १ ॥
तुम दीनन की सुधि लेत देवकीनन्दन ।
महिमा अनन्त भगवन्त भक्त दुखहारी ॥
तुम किया सिया दुख दूर शम्भु धनु खण्डन ।
अति आरत मदन गोपाल मुनिन मनरंजन ॥
करुणानिधान भगवान करि क्यों देरी ॥ २ ॥
तुम सुनि गयन्द की टेर विश्व अविनाशी ।
ग्राह मारि छुटाई बन्ध काटि पग फाँसी ॥

मैं धर्यो तिहारो ध्यान द्वारिकावासा।
अब काहे राज समाज करावत हांसी॥
अब कृपा करो यदुनाथ जान चित चेरी॥ ३॥
तुम पत राखी प्रहलाद दीन दुख टार्यो।
भये खम्भ फाड़ नरसिंह असर संहारयो॥
वन खेलत केशी आदि बकासुर मार्यो।
मथुरा मुष्टिक चाणूर कंस को मार्यो॥
तुम मात पिता की प्रभू छुड़ाई बेड़ी॥ ४॥
भक्तन हित लिए अवतार कन्हाई तुमने।
नल कूबर की जड़ योनि छुड़ाई तुमने॥
जल डूबत प्रभुता अगम दिखाई तुमने।
नख पर गिरिवर धार ब्रज को बचाई तुमने॥
अब विलम्ब रहे कहाँ नाथ हमारी बेरी॥ ५॥
बैठे हैं राजसमाज नीति जिन खोई।
नहिं करत धरम की बात सभा में कोई॥
पाँचों पति बैठे मौन कौन गति होई।
ले नन्दनन्दन को नाम द्रौपदी रोई॥
कर कर विलाप सन्ताप सभा में टेरी॥ ६॥
सुनी दीनबन्धु भगवान भक्त हितकारी।
हरि चीर रूप भये आप हर्यो दुख भारी॥
खैंचत हार्यो मतिमन्द वीर बलकारी।
रख लई दीन की लाज आप बनवारी॥
हरषत सुर बरषत सुमन बजावत भेरी॥ ७॥

क्या करी द्वारिकानाथ मनोहर माया।
तिहुँ लोक चतुर्दश भुवन चीर दर्शाया।
बन्दित 'गणेशप्रसाद' विष्णु गुन गाया॥
दीन के दीनानाथ विपत निरवेरी॥ ८॥

(५५)

रुकमणी की टेर

मैं कियो कौन पाप रुकमणी टेरी।
बनि आयो वर सिसपाल असुर चन्देरी॥ टेक॥
क्या भूखे प्रिय उठाये दान नहीं दीन्हा।
दुर्बल का आये द्वार निरादर कीन्हा॥
जल पीवत घेरी गऊँ सन्त नहीं चीन्हा।
क्या काऊ गरीब का माल जुलुम से छीना॥
जो आय पिता के नगर असुर ने घेरी॥ १॥
कन्या को झिड़की दई सास को गारी।
क्या पति आज्ञा, टाल रही नित न्यारी॥
क्या पुत्र बिछोह किया मैं बन महतारी।
क्या सौतेले बालक पर बिपता ढारी।
क्या कोई सती नारी की मति मैं फेरी॥ २॥
क्या देत किसी को दान मैं भांजी मारी।
सन्तों की निन्दा करत कबहुँ ना हारी॥
क्या निर्दोषी को दोष लगायो भारी।
क्या भीतर राख्यो बैर प्रकट रही प्यारी॥
क्या बैठि कुसंगत भई असुर मति मेरी॥ ३॥

क्या मार के ठोकर से मैं हटाई गैया।
वैरी मेरा नाहक भया वीर रुकमैया॥
मेरी नाव पड़ी मझधार न कोई खिवैया।
व्रजराज उवारो डूब चली अब नैया।
कहै "शम्भूदास" करै आस चरण की चेरी॥ ४॥

(५६)

॥ श्री सत्यनारायणाय नमः॥

शरणागत पुकार

(तर्ज—आजा आजा रे सांवरिया म्हारा देश ऊबी जोऊ वाटड़ली)

राखो राखो जी भगवान् भक्त की लाज भक्त तेरे द्वार खड़े
ना कोई मेरा कुटुम्ब कबीला ना कोई परिवार।
ना कोई मेरा संगी साथी ना कोई संसार॥ (राखो०)
ना कोई मेरी हाट हवेली ना कोई दरबार।
ना कोई मेरा रथ पालकी ना कोई असवार॥ (राखो०)
ना कोई मेरी श्रद्धा साहेबी ना कोई भण्डार।
ना कोई मेरा वस्त्राभूषण ना कोई श्रृङ्गार॥ (राखो०)
ना कोई मेरा उद्योग धन्धा ना कोई व्यापार।
जहाँ देखूँ तहाँ तूँही-तूँही और देखूँ दरबार॥ (राखो०)
कोई न वस्तु अपनी मानो यह नाटक संसार।
ममतापन को त्यागो भाई कर्त्तव्य करो संसार॥ (राखो०)
दिया लिया तेरे संग चलेगा दान दया उपकार।
अपना कर्त्तव्य कभी ना भूलो भजन भक्ति सत्कार॥ (राखो०)

कर्म भोग भोगन को आये मात्र जीव संसार।
कर्म भोग भोगन के तांई मत भूलो कर्तार॥ (राखो०)
कर्म भोगकर जाना होगा ईश्वर के दरबार।
लेखा लेगा राई-राई फर्क रती नहीं सार॥ (राखो०)
सब मिलकर अब आओ भाई गुण गावैं करतार।
जो कोई भाई शरण आपके उसका बेड़ा पार॥ (राखो०)
नैहचा राखो नेड़ा भाई निश्चय ही कर्तार।
दीनबन्धु है नाम आपका भक्तवत्सल पतवार॥ (राखो०)
तूँही मेरा कुटुम्ब कबीला तूँही है परिवार।
तूँही मेरा संगी साथी तूँही है संसार॥ (राखो०)
तूँही जल में तूँही थल में तूँही पाताल आकाश।
ना कोई ऐसी वस्तु देखो जहाँ नहीं तेरा प्रकाश॥ (राखो०)
मोह माया में नहीं लुभावो मायारूपी संसार।
अपना जीवन सफल बनाओ यही तत्त्व है सार॥ (राखो०)
एक अर्ज प्रभु यही दास को नैया कर देना उस पार।
तीन लोक में महिमा तेरी तूँही है पतवार॥ (राखो०)
"रावत" ने यह भजन बनाया गुण गाया करतार।
इष्टदेव है मेरा भाई श्री श्रीसत्यनारायण भगवान॥ (राखो०)

(५७)

श्रीमन्नारायण-नाम-संकीर्त्तनम्

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण
भज मन नारायण नारायण नारायण॥१॥
लक्ष्मीनारायण नारायण २ श्री सत्यनारायण नारायण २॥श्री॥२

वेद पुराण भागवत गीता वाल्मीकि जी की रामायण ॥श्री॥ ३
चारूँ वेद पुराण अष्ट दश वेद व्यास जी की पारायण ॥श्री॥ ४
शिवसनकादि आदि ब्रह्मादिक सुमिर-२ भए पारायण ॥श्री॥ ५
श्यामल गात पीताम्बर सोहे विप्र चरण उर धारायण ॥श्री॥ ६
नारायण के चरण कमल पर कोटि काम छवि वारायण ॥श्री॥ ७
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे गल कौस्तुभ मणि धारायण ॥श्री॥८
खम्भ फाड़ हिरणाकुश मारयो भक्त प्रह्लाद उबारायण ॥श्री॥६
गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त-लड़त गज हारायण ॥श्री॥१०
जोभर सूँड रही जल वाहर तव हरिनाम उचारायण ॥श्री॥ ११
जल डूबत गजराज उबारयो चक्र सुदर्शन धारायण ॥श्री॥ १२
सरयू के तीर अयोध्या नगरी रामचन्द्र अवतारायण ॥श्री॥ १३
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अद्भुत शोभा धारायण ॥श्री॥ १४
सरयू के नीरे तीरे तुरंग नचावे धनुषवाण कर धारायण ॥श्री॥ १५
कोमल गात पीताम्बर सोहै उर वैजन्ती धारायण ॥श्री॥ १६
बक्सर जाय ताड़का मारी मुनिके यज्ञ किये पारायण ॥श्री॥ १७
परसत चरण सिला भई सुन्दर बैठ विमान भई पारायण ॥श्री॥१८
मात पिता की आज्ञा पाई चित्रकूट पगधारायण ॥श्री॥ १६
सागर ऊपर शिला तिराई कपिदल पार उतारायण ॥श्री॥ २०
रावण के दस मस्तक छेदे राज विभीषण पारायण ॥श्री॥ २१
राम रूप होई रावण मारयो भक्त विभीषण तारायण ॥श्री॥ २२
यमुना के नीरे तीरे मथुरा नगरी श्रीकृष्णचन्द्र अवतारायण ।श्री २३
मथुरा में हरि जन्म लियो है गोकुल में पग धारायण ॥श्री॥ २४
बाल समय हरि पूतना मारी, जननी की गति पारायण ॥श्री॥ २५

बालपने मुख मटिया खाई तीन लोक दरशारायण ॥श्री॥ २६
मातु यशोदा ऊखल बांध्यों, यमलाअर्जुन तारायण ॥श्री॥ २७
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, श्रवणन कुण्डल धारायण ॥श्री॥ २८
यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावे, मुखपर मुरली धारायण ॥श्री॥२६
पैठि पाताल कालियो नाथ्यो, फण-फण निरत करारायण ॥श्री॥ ३०
वृन्दावन में रास रचायो सहस्र गोपी एक नारायण ॥श्री॥ ३१
इन्द्र कोप कियो व्रज ऊपर वर्षत मूसलधारायण ॥श्री॥ ३२
डूबतहिं व्रज राख लियों हैं नख पर गिरिवर धारायण ॥श्री॥ ३३
मात पिता की बन्दी छुड़ाई, मामा कंस को मारायण ॥श्री॥ ३४
कृष्ण रूप होय कंस पछाड्यो, उग्रसेन कुल तारायण ॥श्री॥ ३५
द्रुपद सुता को चीर वढ़ायो दुष्ट दुशासन हारायण ॥श्री॥ ३६
वुर्योधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर पारायण ॥श्री॥ ३७
शवरी के बैर सुदामा के तन्दुल रुचि २ भोग लगारायण ॥श्री॥३८
सुत को नाम अजामिल लीन्यो नाम लेत अघतारायण ॥श्री॥ ३६
अजामिल गज गणिका तारी, ऐसे पतित उधारायण ॥श्री॥ ४०
जो कोई भक्ति करे माधव की मात-पिता कुल तारायण ॥श्री॥४१
श्री सत्यनारायण नाम लेत ही पाप होय सब छारायण ॥श्री॥ ४२
"माधवदास" आस रघुवर की भवसागर भये पारायण ॥श्री॥ ४३

(५८)

भजन

श्रीराधे गोविन्दा, गोपाला तेरा प्यारा नाम है।
मोर मुकुट माथे तिलक विराजे। गल वैजयन्ती माला।। गल० ॥

कोई कहे वसुदेव के नन्दन। कोई कहे नन्दलाला ।।श्रीराधेगो०।।
जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया। मुरली मधुर वजावे ।।मुरली०।।
ग्वालबाल के संग में कान्हा । माखन मिसरी खावे ।।श्रीराधेगो०।।
चुरा-चुरा नित माखन खाकर। माखन चोर कहायो ।।माख०।।
वृन्दावन में रास रचाकर। गोपियों के मन भाये ।।श्रीराधेगो०।।
द्रौपदी ने जव तुम्हें पुकारा। साड़ी आन वढ़ाई ।।साड़ी आ०।।
भक्तों के खातिर आप वने । प्रभु आकर सेना नाई ।।श्रीराधेगो०।।
इन्दर कोप कियो व्रज ऊपर। नख पर गिरवर धार्‌यो ।।नख०।।
मात-पिताकी वन्द छुड़ाकर। मामा कंश को मार्‌यो ।।श्रीराधेगो०।।
दुर्योधन का मेवा त्याग कर साग विदुर घर खावे ।।साग वि०।।
ऐसे प्रेम पुजारी प्रभु जी। भक्तों के मन भाये ।।श्री राधेगो०।।
अर्जुन का रथ तुमने हाँका। भारत भई लड़ाई ।।भारत भई०।।
नाम को लेकर विष को पी गई। देखो मीरा बाई ।।श्रीराधेगो०।।
जल में गज को ग्राह ने घेरा। जल में चक्र चलायो ।। जल में०।।
जब जब भीड़ परी भक्तन पर। नंगे पावो धायो ।। श्री राधेगो०।।
जो कोई भजन करे नहीं भाई। वो नर जनम वृथा खोता ।।वो०
राम नाम से गणिका तर गई। पढ़ा-पढ़ा घर में तोता ।। श्रीराधे०
नरसी के सब काम संवारे। मुझको मत विसरा रे ।। मुझको०
जन्म-जन्म से तेरो नरसी। तेरो ही नाम पुकारे ।। श्री राधे०

(५६)

एजी म्हारा नटवर नागरिया भक्तां के क्यूं नहीं आयो रे।
भक्तां रे क्यूं नहीं आयो रे, सीधां रे क्यूं नहीं आयो रे ।।टेक।।

धनो भक्त कांई भक्त पूरवलो, जां रो खेत निपजायो रे।
बीज लेर साधां ने बांट्यो, विना बीज उपजायो रे ॥१॥
सेन भक्त थारो सुसरो लागे, जां रो कारज सार्‍यो रे।
वगल रछानी नाई वनकर, नृप को शीश संवार्‍यो रे ॥२॥
नामदेव थारो नानो लागे, जां रो छप्पर छायो रे।
मार मण्डासो छावण लाग्यो, लक्ष्मी वन्द खिंचायो रे ॥३॥
पुरुषो खाती पुरखो हूतो, जां रो पैडो टूट्यो रे।
बिना बुलायो आपहि आयो, रात्यूं लकड़ो कूट्यो रे ॥४॥
कवीर कांई थारो काको लागे, जां घर बालद ल्यायो रे।
खांड़ खोपरा गिरी छुहारा, आप लदावन आयो रे ॥५॥
करमा कांई थारी काकी लागे, जांरो खीचड़ खायो रे।
धावलिये को पड़दो दीनों, रुच-रुच भोग लगायो रें ॥६॥
मीरा कांई थारी मोसी लागे, जां रो विषरो डार्‍यो रे।
राणा विष रा प्याला भेज्या, विष अमृत कर डार्‍यो रे ॥७॥
भिलनी कांई थारी भूवा लागे, जां री जूठन खाई रे।
ऊँच नीच की काण न मानी, रुच-रुच भोग लगायो रे ॥ ८ ॥
बाल भोग को भूखो कान्हा, खोस खागयो वेर रे।
नानीवाई को माहेरो भरता अव थाने आवे जोर रे ॥ ९ ॥
पहिले तो तू आतो रे कान्हा, फिर-फिर सार्‍या काम रे।
नानीवाई को माहेरो भरतां घर का लागे दाम रे ॥ १० ॥
कह "नरसीलो" सुन साँवरिया आणों है तो आव रे।
ब्याही सग में भूंडाँ लागा यूं काँई लाज गमावे रे ॥ ११ ॥

मैं तो आयो थारे भरोसे संग साध रो लायो रे।
म्हारे तो प्रभु कछू न बिगड़े, विरद लाज सी थारो रे॥ १२॥
मैं तो आयो ईश्वर जान लीन्हों चरन सहारो रे।
तूं तो कारो कपटी निकल्यो कृष्ण द्वारकावालो रे॥ १३॥
के राधा रुक्मण बिलमायो, के सुख सोगयो सारो रे।
के भगतन की करत नौकरी, ले गयो देश निकारो रे॥ १४॥
लाज न मारो प्रभुजी लाज न मारो रे।
अब की टेर सुनो प्रभु मेरी, 'नरसिंह' भगत तिहारो रे॥ १५॥

(६०)

सदा रहो अलमस्त राम की, धुन में हो जा मतवाला॥
मस्त हुए प्रह्लाद को देखो, खंभ में राम दिखा डाला।
उनका दुःख हरने के कारण, नरसिंह रूप दिखा डाला।
मस्त हुए ध्रुवराज को देखो, बन में राम दिखा डाला।
उनका दुःख हरने के कारण; शंखचक्र दिखला डाला॥ २॥
मस्त हुए तुलसी को देखो, रामायण को रच डाला।
उनका दुःख हरने के कारण, हनुमत कलम चला डाला॥ ३॥
मस्त हुए हनुमान को देखो, उर में राम दिखा डाला।
उनका दुःख हरने के कारण प्रेम का पंथ निभा डाला॥ ४॥
मस्त हुए अर्जुन को देखो, प्रभु से रथ हँकवा डाला।
उनका दुःख हरने के कारण, गीता ज्ञान सुना डाला॥ ५॥
मस्त हुई सबरी को देखो, मीठा बेर खिला डाला।
उनका दुःख हरने के कारण, जहर को अमृत बना डाला॥ ६॥

मस्त हुई द्रौपदी को देखो, अपना चीर बढ़ा डाला॥
उनका दुःख हरने के कारण वस्त्र का ढेर लगा डाला॥ ७॥
मस्त हुई मीरा को देखो, विष का प्याला पी डाला।
उनका दुःख हरने के कार,ण जहर को अमृत बना डाला॥ ८॥
मस्त हुए गजराज को देखो, अपनी टेर सुना डाला।
उनका दुःख हरने के कारण, जलमें चक्र चला डाला॥ ६॥
मस्त हुए नरसी को देख, प्रभु माहेरो भरवा डाला।
उनका दुःख हरने के कारण, सांवल रूप बना डाला॥१०॥
मस्त हुए विभीषण को देखो, राम नाम रटने वाला।
उनका दुःख हरने के कारण राज्य विभीषण दे डाला॥११॥
मस्त हुए नन्दा नाई को देखो डेंडे का रहने वाला।
उनका दुःख हरने के कारण नृप का शीस नवा डाला॥१२॥

(६१)

॥ श्रीजगन्नाथजी का भजन॥

ठाकुर भला विराजो जी छोटी सी जगन्नाथ पुरी में
भला विराजो जी
बलभद्र जी के भइया ठाकुर भले विराजो जी॥ टेक॥
कब से छोड़ी मथुरा नगरी कब से छोड़ी काशी।
झारखण्ड में आय विराजे मथुराजी के वासी॥ ठाकुर०॥
सतयुग छोड़ी मथुरा नगरी द्वापर छोड़ी काशी।
कलयुग में तो आय बिराजे मथुराजी के वासी॥ ठाकुर०॥
उड़िया मांगे खीचड़ो बंगालन मांगे भात।
साधु मांगे दर्शन महा प्रसाद॥ ठाकुर भले॥

दाल रांधूं भात राधूं परवल की तरकारी।
मीन मार के भाग लगावे ऐसी जात बंगाली ॥ ठाकुर० ॥
गली - गली में बाग-बगीचा, घर-घर तुलसी बाड़ी।
गली-गली में केला नारियल, घर-घर ठाकुरबाड़ी ॥ ठाकुर० ॥
दो-दो कोस पर हाट लगाई, पाँच कोस पर चट्टी।
चलते-चलते पाँव पिराने, शरीर हो गई मट्टी ॥ ठाकुर० ॥
चट्टी - चट्टी बनिया लूटे और लूटे फिरंगी।
सिंह दरवाजे पण्डा लूटे, यात्री भये उदासी ॥ ठाकुर० ॥
काला - काला धंगड़ बेटा, जिनकी लम्बी चोटी।
भाव - भक्ति की सार न जाने उनकी गर्दन मोटी ॥ ठाकुर० ॥
नील चक्र पर ध्वजा विराजै मस्तक सोहे हीरा।
ठाकुर आगे दासी नाचे गावे दास 'कबीरा' ॥ ठाकुर० ॥

(६२)

चौबीस अवतार [राग भैरू]

हरे राम कहो हरे राम कहो, राम राम कहो हरे हरे।
हरे कृष्ण कहो हरे कृष्ण कहो कृष्ण कृष्ण कहो हरे हरे ॥ टेक ॥
सतयुग में पृथ्वी के कारण आप वरात अवतार धरे ॥ १ ॥
सनक सनन्दन यक्षरूप भये नर नारायण आप खरे ॥ २ ॥
कपिलदेव और दत्तात्रेय जो ऋषभदेव अवतार धरे ॥ ३ ॥
ध्रुवरूप होय पृथूरूप भये हयग्रीव भये आप हरे ॥ ४ ।
कच्छरूप होय समुद्र मथ लियो चौदह रतन प्रकाश करे ॥ ५ ॥
मच्छरूप होय शंखासुर मारे च्यारों वेद निकार धरे ॥ ६ ॥
खम्भ फाड़ प्रह्लाद उबार्‌यो हिरणाकुश के प्राण हरे ॥ ७ ॥

वामन होय बली को छल लीन्यों सब देवन के काज सरे ॥ ८ ॥
हरी रूप और हंस रूप भये और मोहिनी रूप धरे ॥ ९ ॥
धनवन्तर मनवन्तर होकर वेद व्यास जी वेद भने ॥१०॥
परसुराम होय परसा लेकर क्षत्रिय निरवंश करे ॥११॥
राम रूप होय रावण मारे सब भूमि के भार हरे ॥१२॥
कृष्ण रूप हो कंस पछाड़े नख पर गिरिवर आप धरे ॥१३॥
वेध रूप भये जगन्नाथजी जंगल में जाय बास करे ॥१४॥
कलयुग में केलवन्तरी हो गये यह चौबीसों रूप धरे ॥१५॥

(६३)

आरती कुञ्जबिहारी की
गिरिधर कृष्ण मुरारी की।
कनकमय मोरमुकुट विलसे
देवता दरसन को तरसे।
गगन से सुमन राशि बरसे
बजे मुरचंग और मृदङ्ग
ग्वालिनी सङ्ग। लाज रख सब व्रजवासी की। १।
गले में वैजयन्ती माला
बजावे मुरली मधुरवाला।
कान में कुण्डल झलकाला
नन्द के नन्द नन्दलाला।
गगन सम अन्तिकान्ति कालो
राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली

भ्रमर सी अलक कस्तूरी तिलक चन्द्र सी
झलक-ललित छवि श्यामा प्यारी की । २ ।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा
कलुष - कलिहारिणी श्रीगंगा ।
स्मरण से होत मोह भंगा
बसी शिवसीस जटा के बीच
हरे अघ कीच । चरण छवि श्री बनवारी की । ३ ।
चमकती उज्ज्वल तट रेणु
बज रही वृन्दावन वेणु
चहुँ दिशि गोप ग्वाल धेनु
हंसत मृदु मंद चांदनी चंद
कटत भवफंद । टेर सुन दीन भिखारी की । ४ ।

(६४)

सांध्य आरती

जसोदा मैया खोल किवरियां लालो आयो गाय चराय ।
आयो गाय चराय नन्द को आयो धेनु चराय । टेर ।
गऊ गोप गोपाल दाऊ संग बंशी मधुर बजाय ।
सुन गोपी जन मन हरषित है चढ़ी अटारी धाय । १ ।
जसोदा मैया करे आरतो फूली नांय समाय ।
हँस हँस लेत बलैया मैया बारबार बलि जाय । २ ।
खिरक खोल गैया ढिर दीनी
बछुरा रहे चुंघाय ।
कारी काजर धोरी धूमर को रह्यो दूध दुहाय । ३ ।

दूध दुहाय कहे मनमोहन माखन दे री माय।
सद्लोनी तोहे प्रात मिलेगी लाला पीओ दूध अघाय। ४।
इतने में एक सखी सांवली टेरत पहुँची आय।
तौं बिन मोकूं दूध न देहैं गैया रही रम्भाय। ५।
सखी सांवरी की मनमोहन ने जाय दुहाई गाय।
आधो दूध दोहनी में दूह्यो आधो रह्यो चढ़ाय। ६।
सखी सांवरी कहन लगी है मधुरे मन मुसकाय।
"सूरस्याम" यशोदा के लाला नित्य दुहावहुँ गाय। ७।

(६५)

तिरछे चरण करै बनवारी
खड़े कदम के तले विहारी।
टेर रही मुरली मनुहारी
लं विशाल की कैसी झाँकी है।
साजनिया देखो नंदलाल की। १।
मोर मुकुट की लटक निराली
खिली अजब है हुस्न हजारी।
हर शोभा मन हरने वाली
कण्ठमाल की। कैसी झांकी है। २।
पीत वसन काछे दुपटा है
श्याम बरण मानी इन्द्र घटा है।
धेनुपाल की । कैसी० ३।
"भजन" कहे सब सुनो सहेली
बसी जिगर सूरत अलबेली।

परण प्राण प्यारी मन मेली
ग्वालवाल की । कैसी० ४ ।

भजन (६६)

मनवा काईं कमायो रे !

लियो न हरि को नाम, विरथा जनम गवाँयो रे ॥ टेक ॥
गर्भवास में कष्ट भयो, मालिक ने ध्याओ रे ।
बाहर काढ़ो नाथ ! मैं तो अति दुःख पायो रे ॥ १ ॥
कई जन्म को पाप पुण्य, तूने वहाँ दरसायो रे ।
अब भूलूंगो नाहिं, ऐसो वचन सुनायो रे ॥ २ ॥
सब संकट तेरा मेट्या मालिक, बाहर मालिक लायो रे ।
काम सर‍्यो दुःख विसर‍्यो, हरि याद आयो रे ॥ ३ ॥
पाछे तूं रोवण ने लाग्यो, जुग कहै जायो रे ।
साँच कहे संसार कोई हरि न पायो रे ॥ ४ ॥
बालपणे में बालों-भोलो, सारां खिलायो रे ।
तरुणी तिरिया व्याही थाने, काम सतायो रे ॥ ५ ॥
कुटुम्ब कबीलो धन देख्यां तो, अति हरषायो रे ।
मरणों सूझ्यो नाहिं तृष्णा, लोभ सतायो रे ॥ ६ ॥
वृद्ध भयो तेरा हाड़ थक्या, सारां छिटकायो रे ।
अकल विना को डैण, म्हारो मान घटायो रे ॥ ७ ॥
जब स्वांसा तेरी वीती, आडो कोई न थारे आयो रे ।
हुकुम दियो जमराज थाने, पकड़ मँगायो रे ॥ ८ ॥
पाप पुण्य को निरणो सारो, बाँच बाँच सुणायो रे ।
पड्यो नरक में भोग कियो तू, अपणो पायो रे ॥ ६ ॥

सत् गुरु "कालूराम" ज्ञान, यह साँच बतायो रे।
पार लगावो नाथ, धन्नो शरणों आयो रे ॥१०॥

भजन (६७)

मनवा क्यों घबड़ायो रे।
सिर पर दीन दयाल बेड़ा पार लगावे रे ॥ टेक ॥
निज करनी को याद करूँ जब जी घबरावे रे।
प्रभु की महिमा सुन सुन मन में धीरज आवे रे ॥ १ ॥
शरणागत की लाज तो सब ही ने आवे रे।
तीन लोक के नाथ लाज हरि नाहिं गवावे रे ॥ २ ॥
जो कोई आनन्द मनसे प्रभु को ध्यान लगावे रे।
उनके घर को योग छेम प्रभु आप निभावे रे ॥ ३ ॥
जो मेरा अपराध गिनूँ तो अन्त न आवे रे।
ऐसे दीनदयाल हरि चित्त में एक न लावे रे ॥ ४ ॥
पतित उधारन बिड़द आप को वेद बतावे रे।
एक पतित के काज बिड़द को नाहिं लजावे रे ॥ ५ ॥
महिमा अपरम्पार सुर-नर-मुनि जन गावे रे।
वे हैं नन्द किशोर भक्त की ओड़ निभावे रे ॥ ६ ॥
वो है रमानिवास भक्त की त्रास मिटावे रे।
तूँ मत होय उदास प्रभु को दास कहावे रे ॥ ७ ॥

भजन (६८)

मनुवा राम सुमरिले रे।
आसी तेरे काम नाम की बालद भर ले रे ॥ टेक ॥

संत कहे जो वात भजन की चित्त में धर ले रे।
मिनष जनम को सफल करे तो अवही कर ले रे ॥ १ ॥
भवसागर से तिरणों चाहे तो हरिको भज ले रे।
राम नाम की नाव वैठ के पार उतर ले रे ॥ २ ॥
खोटा खोटा करम करे तो तू कुछ डर ले रे।
आगे हैं यमराज थारी खूब खवर ले रे ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह पाँचा ने तज दे रे।
कहे पुजारी तिरणों चाहे तो जीवन भर ले रे ॥ ४ ॥

भजन (६९)

॥ आरती श्रीवैकुण्ठनाथ भगवान् की ॥

जय कमला कान्ता, प्रभु जय लक्ष्मी कान्ता।
शरणागतरक्षन्ता, २, वैकुण्ठ भगवन्ता ॥ ॐ जय कमला०
दिव्यदेश गंगा तट सुन्दर, मन्दिर अति सोहे ॥ प्रभु मंदिर
निरख निरख छवि सुन्दर, २, मुनिजन मन मोहे ॥ ॐ जय कमला०
श्याम स्वरूप मनोहर शोभा, पीत वसनधारी। प्रभु पी०
मुख शोभा शशि मण्डल, २, मंद हँसी प्यारी ॥ ॐ जय कमला०
शीश मुकुट मकराकृत कुण्डल अद्भुत छवि राजे। प्र० अद्भुत
मस्तक तिलक बिराजे, २, वन माला साजे ॥ ॐ जय कमला०
शंख चक्र गदा पद्म विराजे महिमा अति भारी। प्र० महिमा
मणि मुकता बाजूबन्द, २, कंकण सुखरासी ॥ ॐ जय कमला०
हृदय कमल बिच लक्ष्मी कटि में, करधनी राज रही। प्र० करधनी
चरणन में नुपूर ध्वनि, २, छम छम बाज रही ॥ ॐ जय कमला०
श्रीदेवी भूदेवी सङ्ग में पङ्कज मुख सोहे। प्र० पङ्क०

दर्शन कर मन प्रसन्न, भक्तन मन मोहे ॥ ॐ जय कमला०
मणि सिंहासन राजे चितवन कोमल सुखरासी ॥ प्रभु०॥
शेष नाग फण ऊपर, छत्र किये भारी ॥ ॐ जय कमला ॥
जय और विजय पोलिया ठाडे, सखियन चंवर करे ॥ प्रभु० ॥
सनकादिक नारद मुनि, शारद ध्यान धरे ॥ प्रभु शारद० ॥
दीनदयाल दयानिधि, प्रभु तुम भक्तन हितकारी ॥ प्रभु० ॥
शरणागत प्रतिपालक, भव - बंधन - हारी ॥ ॐ जय० ॥
जय जय सब जगपालक, भगवान ही अन्तर्यामी ॥ प्रभु० ॥
सत्यस्वरूप दयामय, करुणानिधि स्वामी ॥ ॐ जय० ॥
आरती श्रीवैकुण्ठनाथ की जो कोई नर गासी ॥ प्रभु० ॥
मनवांछित वर पासी; छूटत चौरासी ॥ ॐ जय० ॥
जय कमलाकान्ता, प्रभु जय लक्ष्मीकान्ता ।
शरणागतरक्षन्ता, वैकुण्ठ भगवन्ता ॥ ॐ जय कमला कान्ता ॥

भजन (७०)

तर्ज—मारवाड़ी

चलोनी वैकुण्ठनाथ का दर्शन करस्याँ जी मन्दिर चालो जी ।
आमां सामां बण्या तिबारा मन्दिर छवि न्यारीजी ।
कवाणिया की बहार सांवरा म्हाने लागे स प्यारी जी ॥ मन्दिर०
जामो प्रभुजी के सोहे केशरिया, दुपट्टा की छवि न्यारीजी ।
किलंगी की बहार सांवरा म्हाने लागे प्यारीजी ॥ मन्दिर० ॥
रतन जड़ित कंचनको गहनो, सर्व सोना को सोहे जी ।
ठोड़ी में को हीरो सांवरा म्हारो मनड़ो मोहे जी ॥ मन्दिर० ॥

श्री देवी और लीला देवी दोनों तरफ में सोहे जी।
शेषनाग की वाहर सांवरा, म्हारो मनड़ो मोहे जी ॥ मंदिर०॥
"जमुना दासी" यों उठ बोली, एक अरज म्हारी मानो जी।
जनम जनम को चाकर नरसी, सांवरा म्हाने शरणां राखो जी
॥ मंदिर चालो जी ॥

भजन (७१)

तर्ज—रसिया

श्रीवैकुण्ठनाथ रंग भीनो, म्हारो मन हर लीनों है।
सिर पर रतन मुकुट मन मोहे, कानन कुण्डलकी छवि सोहे।
उर्ध्वपुण्ड्रको तिलक, ठोड़ी में दमके नगीनो है ॥ श्रीवैकुण्ठनाथ०
बाजूबंद भुजन में सोहे कर कंकण मेरो मन मोहे।
गल वैजन्तीमाला धारे, भक्त मन मोहे है ॥ श्रीवैकुण्ठनाथ०
चार भुजा की शोभा भारी अभय हस्त दास भय टारी।
ऐसे दीनदयाल नाथ, मोहिं लगे पियारे जी ॥ श्रीवैकुण्ठनाथ०
श्यामल गात पीताम्बर, सोहे, दर्शन से मेरे मनको मोहे।
श्रीवैकुण्ठ धाम तज आय, नाथ कलकत्ते विराजे जी ॥ श्रीवैकुण्ठ०॥
गोविन्ददास चरणाँ चित ल्यावे, नरसिंहदास नित दर्शन पावे।
बांगड़ सब परिवार, नाथ, तेरो लियो सहारो जी ॥ श्रीवैकुण्ठ०॥

भजन (७२)

मीराबाई—तर्ज—ऊबी बाटड़ली

थे तो आरोगोजी मदनगोपाल। कटोरो ल्याई दूध को भर्यो।
दूदा जी म्हाने देई भोलावन। जद मैं आई चाल॥
धोली धेनु को दूध गरमकर। ल्याई मिसरी घाल।

क्यां न रुस्या हो मेडतिया भगवान ॥ कटोरो ल्याई०

किण विधि रूठ गया हो प्रभुजी। कारण कहो महाराज ॥
दूध कटोरो धर्‍यो सामने पीवण री काँई लाज ॥
भूखा मरताँ रा चिप ज्यासी थारा गाल ॥ कटोरो ल्याई०
श्याम सलोने दूध आरोगो साँची बात बताऊँ ॥
बिना पिया थो दूध कटोरो। पाछी लेर न जाऊँ ॥
देस्यूँ साँवरिया चरणाँ में, देही त्याग ॥ कटोरो ल्याई०

डरिया श्याम करुणा सुन प्रभुजी। मन्द मन्द मुसकात ॥
गट गट दूध पीवण न लाग्या। चारभुजाराँ नाथ ॥
प्रभु राखो जी भक्तों की जाती लाज ॥ कटोरो ल्याई०

हरष चली मीरा महलाँ में। खाली कटोरो लेय ॥
दूध पाय दादा दूदान। दियो कटोरो देय ॥
खाली देखत ही कटोरो राव रिषाय ॥ कटोरो ल्याई०

अब मीरा पर आफत आई। झूठी साँची कहिवे।
साँचत दूध पियो प्रभुजी ने कौन गवाही देवे।
थाँन नजराँ सूं दिखाऊँ चालो साथ ॥ कटोरो ल्याई०

साज्यो कटोरो लेय सकल मिल। ले मीराँ न सागे ॥
सारा देखर दूध कटोरो। धर्‍यो प्रभु जी के आगे ॥
मीरा ऊबी ऊबी करे अरदास ॥ कटोरो ल्याई०

दया करो दीनों के स्वामी। अब पत राखो म्हारी ॥
काल कटोरों झटके पी गया। आज क्यों करते देरी ॥
काँई शरमाया मीरा का सरजनहार। कटोरो ल्याई०

सुनी प्रेम की टेर प्रभुजी। मन्द मन्द मुसकाया ॥
मीरा दासी जान दयानिधि। चाँरू हाथ बढ़ाया ॥
पी गया मीरा को कटोरो दूध उठाय ॥ कटोरो ल्याई०
मीरा नृत्य करे प्रभु आगे। हरख्यो सारो साथ ॥
भक्तों के वश में गिरधारी चार भुजा रो नाथ ॥
प्यारो लागे जी मेडतियो भगवान ॥ कटोरो ल्याई०

भजन (७३)

(मीराबाई—तर्ज—मारवाड़ी)

मीरा राम भजन में लागी रे, राँणोजी समझावै मीरा एक न माने रे
विष का प्याला राणो भेजा, देवो मीरा मीरा न जाय ॥
कर चरणामृत पी गयी जी थे जाणो रघुनाथ ॥ मीरा० ॥
सर्प पिटारो राणोजी भेजा, द्यो मीरा न जाय ॥
पकड़ गला में पहरिया जी बन गयो नोसरहार ॥ मीरा० ॥
राणो मीरा पर कोपिया जी, ले नंगी तलवार ॥
आगे बढ़कर मारिया जी, मीरां बन गई चार ॥ मीरा०
मीरा महल से उतरी जी, राणो पकड़ायो हाथ ॥
छोड़ो राणाजी म्हारो बांवल्यो, लाग्यो हाथ लेवारो पाप ॥मीरा०
राणा सांड्या भेजिया जी मीरा न पाछी ल्याय ॥
कुछ की तारन कामिनी जी जांसे वंधियो वैर ॥ मीरा०
पीर मीरा को मेडतो जी सासरियो चितौड़ ॥
"बाई मीरा" की बीनती जी सुनियो नन्दकिशोर ॥ मीरा०

भजन (७४)

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हारो कांई करसी ॥
म्हें तो गुण गोविन्द का गास्याँ हो माय ॥टेर॥
चरणामृत को नेम हमारे,
नित उठ दर्शन जास्यां हो माय ॥सीसो०॥
हरि मन्दिर में निरत करास्यां,
राणो जी रूठ्यो वांरो देस राखसी
हरि रूठ्यां किठे जास्यां हो माय ॥सीसोद्यो०॥
लोक लाज की कांण न मानां,
निर्भय निसाण घुरास्यां हो माय ॥सीसोद्यो०॥
राम नाम की झाझ (जहाज) चलास्यां,
भौसागर तरजास्यां हो माय ॥सीसोद्यो०॥
यह संसार बाड़ का कांटा,
ज्या संगत नहिं जास्यां हो माय ॥सीसोद्यो०॥
चरण कमल लपटास्यां हो माय ॥सीसोद्यो०॥
'मीरा' सरण सांवल गिरधारी,
हरी चरण में ध्यान लगास्याँ हो माय ॥सीसोद्यो०॥

भजन (७५)

मैं तो सासरिये नहीं जाऊँ हे माय
म्हारो मन लाग्यो फकीरी में ॥टेर॥
जगत रुठे तो म्हाँने परवाहिज नाही
मै तो रामजी रूठ्याँ मर जाऊँ हे माय ॥१॥
राणोंजी रुठे तो अपनो रावलोहिज राखे जी
मीराँ बाई मन्दिरिये में राजी हे माय ॥२॥

अड़दान पड़दान सब तज दीना

मैं तो दौड़ी-दौड़ी संतारे जाऊँ हे माय ।३।

हार सिंगार म्हाँने कछु ना सुहावे,

मैं तो तुलसाँ की माला पहिनूँ हे माय ॥४॥

कपड़ा लत्ता सब तज दीना,

मैं तो धोला धोल वसतर पहिरुं हे माय ॥५॥

साँवरी सुरत म्हारे हिरदे विराजे,

म्हाने राणों जी दाय नहीं आवे हे माय ॥६॥

माला फेर फेर मनियाँ जो घिसग्या

घिसगी आँगलिया री रेखा हे माय ॥७॥

संत रैदास गुरु म्हाने मिलिया,

मैं तो गुरुवांरी वेची विक जाऊँ हे माय ॥८॥

भजन (७६)

(तर्ज—मारवाड़ी)

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ चरणों मेंदासी कब की खड़ी ॥टेर॥

साजनियाँ दुश्मन होय वैठ्या, लाजूं खड़ी खड़ी ।

आप बिना मेरो कौन धनि है,

अधविच नैया मेरी अटक पड़ी ॥१॥

हार श्रृंगार सभी तज दीना,

और मोतियन की लड़ी लड़ी ।

ज्ञान बाँण हृदय में लाग्यो, प्रेम कटारी दाता लुलक पड़ी ॥२॥

यो मन मस्त कह्यो क्यों नहीं माने, पलटे घड़ी-घड़ी ।

"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर,

हरि का चरणां में दासी लिपट पड़ी ॥३॥

(७७)

नाथ कैसे गज को फन्द छुड़ायो ॥टेर॥
गज और ग्राह लड़त जल भीतर गज मन में घबड़ायो ।
जो भर सूंड रहो जल बाहर कृष्ण कृष्ण चिल्लायो ॥१॥
कालीदह में कूदे जाकर फण फण नृत्य करायो ।
गिरि गोवर्धन कर पर धर्‍यो इन्द्र का मान घटायो ॥२॥
खम्भ फाड़ हिरणाकुश मार्‍यो नरसिंह रूप दिखायो ।
अजामिल गज गणिका तारी द्रौपदी चीर बढ़ायो ॥३॥
कुरुक्षेत्र में खाँड़ो खटक्यो कौरव नाश करायो ।
दुर्योधन को मान घटायो मोहिं न भरोसो आयो ॥४॥
चतुर सखिन मिलि पकड़ बान्ध्यो रेशम तार सुहायो ।
छूट्यो नहीं राधा को कंकण गिरिवर कैसे उठायो ॥५॥
जोगी जांको ध्यान धरत हैं तोहूँ ध्यान न आयो ।
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित लायो ॥६॥

(७८)

भजन—कर्माबाई की खीचड़लो

तर्ज—ऊबी जोरूँ बाटड़ली

बापू म्हाने भुलाय गयो पूजा, वो गयो गाँव दूजा,
जी मोरी काँई अटकी ।
कर्मा मेरो नाम, योही तो मेरो गाँव, क बेटी जाट की ॥बापू०॥
उठ सी मैं असनान मैं कीनो, खोल मन्दिर बुहारो दीनो ।
ल्याई धोली गाय को दूध उठो प्रभु मूंडो धोय कर पील्यो ।

फेर जीमो खीचड़ो आप, घी की तो काँई बात,
कड़्ढी तो घालूं छाछ की ॥ कर्मा मेरो नाम०
काल थारै तांई सीरो बनाऊँ, पानी भी मीठे कूवेरो ल्याऊँ ॥
मूंगा की दाल ; जामें घी की धार,
थाँन छोटा छोटा फलका जिमाऊँ ॥
थाँन भावै सोई ले लीजो, म्हाने कह दीजो,
कमी तो काँई बात की । कर्मा मेरो नाम०
बापू क्या क्या हुकुम उठाऊँ, थे जीम ल्यो तो मैं
भी रोटी खाऊँ ॥
धावलियो रो पड़दो लगाऊँ जी मैं पूठ फेर कर जाऊँ ॥
प्रभु रुचि रुचि भोग लगाये, देखतीं जाये, सुररिया
आपकी ॥ कर्मा०
पड़दो उठाय कर्मा बोली काँई ल्याऊँ थे जीम ल्यो तो
चलू कराऊँ ।
काल जीमण न वेगा आओजी, थाँक डोबा की राबड़ी
बनाऊँ ।
प्रभु कवै आज मैं जाऊँ, काल वेगी खाऊँ, बात बड़ी
प्रेम की ॥कर्मा०

(७६)

अरज करे मेहता नरसी, माहेरो भरबान थान आयाँ सरसी ॥
नानी बाई याद करे, देखो नयन से नीर पड़े ।
बिगड़ी बात बनाया सरसी ॥ माहेरा भरबान० ॥
कोठे चढ़ बाई याद करे, देवर नाराण्यो बात करे ।
दो दो आँसू बहायाँ सरसी, मोहेरो भरबान० ॥

इब बैठाँ नहीं काम चले, भात भरन को नेग टले।
नानी न चूनड़ी उढ़ायाँ सरसी, माहेरो भरवान० ॥
'देवकीनन्दन' ना देर करो नरसी के दुख दूर करो।
सारी बात बनाया सरसी, माहेरो भरवान० ॥

(८०)

नाथ मैं थारो जी थारो।
चोखो बुरो कुटिल अरू कामी, जो कुछ हूँ सो थारो ॥
बिगड्यो हूँ तो थारो बिगड्यो, थे ही मनै सुधारो।
सुधर्‌यो तो प्रभु थारो सुधर्‌यो, थाँ सूं कदे न न्यारो ॥
बुरो बुरो मैं तो भोत बुरो हूँ, आखर टाबर थारो।
बुरो कहा कर मैं रह-जास्यूँ, नाँव बिगड़सी थारो ॥
थारो हूँ थारो ही बाजूँ, रहस्यूँ थारो थारो।
आँगलियाँ नख परै न होवे, या तो आप विचारो ॥
मेरी बात जाय तो जाओ, सोच नहीं किछू म्हारो।
मेरे बड़ो सोच यो लाग्यो विड़द लाजसी थारो ॥
जचे जिस तराँ करो नाथ अब, मारो चाहै त्यारो।
जाँघ उघाड्याँ लाज मरूँगा, ऊँडी बात विचारो ॥

(८१)

नाथ थारै शरणै आयो जी।
जचै जिस तराँ खेल खिलावो, थे मनचायो जी ॥
बोझो सभी उतर्‌यो मन को, दुःख विनसायो जी।
चिन्ता मिटी बड़ा चरणाँ को सहारो पायो जी ॥

सोच फिकर अब सारो, थारै ऊपर आयो जी।
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो, अन्तर हरखायो जी॥
जस अपजस सब थारो, मैं तो दास कुहायो जी।
मन भँवरो थारा चरण कमल में, जा लिपटायो जी॥

(८२)

एरी माँ वंशीवालो कान्ह
चन्द्रबदन मृगलोचन राघे वर पायो घनश्याम॥ टेर॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे कुण्डल झलके कान।
मुख पर मुरली सुघर विराजै केशर तिलक लुभान॥१॥
इत ते आई ब्रज की गूजरी उत से आये कान्ह।
अधबिच झगड़ो रोपियो माँगे दही को दान॥
कब के दानी भये कृष्ण तुम कब हम दीन्हें दान॥२॥
नन्द महर घर गऊ चरावे पड़ी अनोखी बान॥३॥
सुर नर मुनि जाँको ध्यान धरत हैं गावें वेद पुरान।
"चन्द्रसखी" भजु बालकृष्ण छवि चरण कमल में ध्यान॥४॥

(८३)

डसगयो रे कालियो नाग राधेजी की ऊँगली नें॥टेर॥
राधा झूलन गई बाग में सङ्ग सखियन के साथ।
ऐसो डंक दियो लहरी ने पीलो पड़ गयो गात॥१॥
नस-नस सेती चुवे पसीनो अंग रह्यो कुम्भलाय।
नाड़ी की गति मंद भई है कीजे कौन उपाय॥२॥
एक सखी तो पलंग बिछावै दूजी डारे बार।
तीजी सखी केवड़ो छिड़के चौथी वैद बुलाय॥३॥

बरसाने से चल्यो साँवरो पिलगाँ बैठ्यौ आय।
"चन्द्रसखी" भज बाल कृष्ण छवि दीन्ही है कसक मिटाय ॥४॥

(८४)

पाती लिखे रुकमणा नार द्वारकावाले ने ॥टेर॥
काहे की पाती करी काहे की कलम दवात।
कौन सखी को नाम लिख्यो है कौन द्वारका ने जाय ॥१॥
चीर फाड़ पाती करी अंगुली की कलम बनाय।
कृष्णचन्द्र को नाम लिख्यो है विप्र द्वारका ने जाय ॥२॥
बगुले घेरी माछली सिंह ने घेरी गाय।
रुकमण ने तो असुराँ घेरी लीज्यो वेग छुड़ाय ॥३॥
"पदम" भणै प्रणमें पाय लागूँ हरि चरणों में चित लाय।
कदनापुर में आय के हरि रुकमण लीन्हीं व्याय ॥४॥

(८५)

बँगला, खूब बना महाराज जिसमें नारायण बोले।
इस बँगले के दस दरवाजे बीच पवन को खम्भो।
आवत जावत कछु ना दीखे योही बड़ो अचम्भो ॥१॥
तीन गुणों की ईट बनाई पाँच तत्व का गारा।
राम नाम की छत छवाई चेतन है चेजारा ॥२॥
इस बँगले की चार बुरुज हैं बहत्तर बन्या कंगूरा।
तीन सौ साठ चुनावन लाग्या जब ये हुआ चोफेरा ॥३॥
इस बँगले में सुरता नाचे मनवा ताल बजावे।
सुरत निरत का बज रहा बाजा राग छतीसूँ गावै ॥४॥

इस नयना नारायण देखे सुरत राम से लागे।
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो दिलकी दुविधा भागे ॥५॥

(८६)

मेरी हुँडी सिकारो महाराज साँवरा गिरधारी।
मोहे एक तिहारो आधार ए साँवरा गिरधारी ॥ साँवरा ॥ १
राखी पद प्रह्लाद की, घर नरसिंह अवतार।
खम्भ फाड़ प्रगट भये, टार्‍यो भूमि को भार ॥ साँवरा ॥ २
पूँजी गोपीचन्दन मेरी, तुलसी सोने को हार।
साँचा गहना साँवरा, मेरी दौलत है झाँझ करतार ॥साँवरा॥३
साँई नजर फेरिया, वैरी सकल जहान।
टुक एक झोला मेहरका, लाखों ही करत प्रणाम ॥साँवरा॥ ४
सेवा पूजा बंदगी, सबहि तिहारे हाथ।
हम तो कछु जानत नहीं, तुम जानों रघुनाथ ॥ साँवरा ॥५

(८७)

तूने हीरो सो जन्म गमायो भजन बिना बावरे ॥टेर ॥
कदे न बैठ्यो सत सङ्गतमें, कदे न हरिगुण गायो।
पचि पचि मर्‍यो बैल की नाँई, सोय रह्यो उठ खायो। १।
या संसार हाट बनिये की, सब जग सौदे आयो।
चात्रग माल चोगुणों, कीन्यो मूर्ख मूल गमायो। २।
या संसार फूल सेमर को, सूवो देख लुभायो।
मारी चोंच निकल गई रूई, शिर धुन धुन पछितायो। ३।
या संसार माया को लोभी ममता महल चिणायो।
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो हाथ कछु नहीं आयो। ४।

(८८)

मत बाँधो गठरिया अपजस की । टेर ।

या संसार बादल की छाया, करो कमाई हरि रस की । १ ।

जोर जवानी ढलत जायगी, वाल अवस्था तेरी दिन दस की । २ ।

धर्म दूत जब फाँसी डारे, खबर लेवे तेरी नस नस की । ३ ।

कहत "कबीर" सुनो भाई साधो, जब तेरे बात नहीं बस की । ४ ।

(८६)

॥ वटाऊड़ा ॥

मन इबके बचाले मेरी मांय-वटाऊड़ो आयो लेवणन ॥

पाँच कोटरी दस दरवाजा, इस काया के माँय ।

लुकती छिपती हार गई मैं—छिपतीन छोड़ी नाय ॥

बोली कन्या सुण मेरी माता—एक वर वाहर आव ।

हाथ जोड़ बताऊं तेर आग, इब क ले मोय वचाय ॥

बोली वुढ़िया सुनो पाँवणा, एक हमारी वात ।

मेरी कन्या भोली भाली, इबके करदे माफ ॥

कह पाँवणा सुणरी वुढ़िया, तू भी हमारी बात ।

हुकुम मालक को हुयो जरूरी, चलकर मैं आयो आधी रात ॥

सावण का दिन सतरह बीत्या, हुई तीज परभात ।

खेलण की मन में हरि मेरे, सङ्ग की सहेल्याँ साथ ॥

भाई वन्धु कुटुम्ब कवीला, शिर पर फेरे हाथ ।

पाँच भायां की भाण लाड़ली, कोई न चाल्यो मेरे साथ ॥

इन सासरिया सब न जाणो सुनो सज्जन चित लाय ।

कहत "कबीर" सुनो भाई साधो, हरि से ल्यो हेत लगाय ॥

(६०)

आरती श्रीरामचन्द्रजी की

ॐ जय जानकीनाथा प्रभु जय श्री रघुनाथा।
दोऊ कर जोड्याँ विनऊं प्रभु सुन मेरी वाता ॥जय० ॥१॥
तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ओ प्रभु प्राण पिता माता।
तुम हो सजन संगाती आप हो सजन संगाती,
श्री-भक्तिमुक्ति दाता ॥ॐ जय० ॥२॥
चौरासी प्रभु फन्द छुड़ावो मेटो यम त्रासा ओ प्रभु मेटो०।
निशि दिन प्रभु मोहि राखो, सब दिन हरि मोहि राखो
अपने संग साथा ॥ ॐ जय० ॥३॥
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुघन संग चारों भैया।
जगमग ज्योति विराजत शोभा अति लहिया॥ ॐ जय० ॥४॥
हनुमत् नाद बजावत नेवर ठुमकाता ओ प्रभु०।
सुवरण थाल आरतो, कंचन थाल आरतो करत कौशल्यामाता ॥
ॐ जय० ॥५॥
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजत शोभा अति भारी ओ प्रभु०।
"मनीराम" दरसन की आशा पल पल बलिहारी ॥ॐ जय०॥६॥

(६१)

स्तुति रामचन्द्रजी की

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप निहारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी,
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी॥ १॥

कह दुई करजोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता ।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति सन्ता ।
सो मम हित लागी अति अनुरागी प्रगट भये श्रीकन्ता ॥ २ ॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहैं ।
सो मम उरबासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहै ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहिं प्रकार सुत प्रेम लहै ॥ ३ ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला अतिप्रियशीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होय बालक सुर भूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥ ४ ॥
दोहा :—बिप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गोपार ॥

(६२)

कीर्तन

श्री राम जय राम जय जय राम
भीड़ पड़ी भक्तों ने पुकारा, हरो जो नाथ ! मम कष्ट अपारा ।
दशरथ के घर जनमें राम, श्रीराम० ॥
ताड़क वन में ताड़का मारी, गौतम नारि अहिल्या तारी ।
ऋषियों के दुःखहर्त्ता राम, श्रीराम० ॥
जनकपुरी में धनुष को तोड़ा, सीताजी से नाता जोड़ा ।
कैसी सुन्दर जोड़ी राम, श्रीराम० ॥

राज तिलक की भयी तैयारी, कैकेयी ने सब बात बिगाड़ी।
चौदह वर्ष गये वन राम, श्रीराम० ॥
शृंगवेरपुर गये रघुराई, केवट नैया पार लगाई।
गंगा पार हुए श्री राम, श्रीराम० ॥
चित्रकूट में आये राम, सब देवन के सारे काम।
भरत मिलाप करे भगवान, श्रीराम० ॥
अयोध्या जी में भरत जी आये, नन्दी ग्राम एक नया बसाये।
पादुका राज चलावे राम, श्रीराम० ॥
पञ्चवटी में आवे रघूराई, सूर्पनखा की नाक कटाई।
खरदूषण को मारे राम, श्रीराम० ॥
मृग मारने रामजी धाये; सीता ने लक्ष्मण को पठाये।
रावण ले गया सीता राम, श्रीराम० ॥
राम और लक्ष्मण चलकर आये, आन बैठे सबरी के पाये।
मीठा बेर खिलाई राम, श्रीराम० ॥
ऋष्यमूक पर्वत गये रघूराई, सुग्रीव भगत से करी मिताई।
बालि को मार गिरावे राम, श्रीराम० ॥
सीता खोजन हनुमानजी सिधारे, समुद्र लांघकर लंका आये।
मुद्रिका गोद गिराये हनुमान, श्रीराम० ॥
मेघनाथ से युद्ध मचायो, ब्रह्मफाँस में बन्धकर आयो।
लंका दहन करे हनुमान, श्रीराम० ॥
सीता कंगन दियो उतार, लेकर चले पवनकुमार।
आय उतरे सागर के पार, श्रीराम०।

कंगन ले रघुवर को दीन्हा, समाचार सीता का कीन्हा।
सीता विकल सुने भगवान, श्रीराम० ॥
सीता विकल सुने रघुराई, अँखिया प्रेम अश्रु भरि आई।
हनुमत कंठ लगाये राम, श्रीराम० ॥
सागर ऊपर शिला तिराई, सारी सैना पार लगाई।
रामेश्वर को थापे राम, श्रीराम० ॥
मेघनाद से हुई लड़ाई, लक्ष्मणजी को मूर्छा आई।
हनुमत को पठाये राम, श्रीराम० ॥
हनुमान जी संजीवन लाये, ले बूंटी लक्ष्मण को पिलाये।
सूत्यो सिंह को जगायो राम, श्रीराम० ॥
लंकापति रावण को मारे राज विभीषण को दे डाले।
सीता लेकर लौटे राम, श्रीराम० ॥
माता कौशल्या आरती उतारे, सब देवन जय जय कार पुकारे।
राज तिलक भयो सीताराम, श्रीराम० ॥
लव कुश ने जब करी लड़ाई, रण भूमि में जीत कराई।
तब सीता ने पाये राम, श्रीराम० ॥
अखिल जगत के हो तुम मालिक, राघव रूप चराचर नायक।
भवसागर से तारो राम, श्रीराम० ॥
"तुलसीदास" भजो भगवाना, हरि चरणों में ध्यान लगाना।
पूरण होवे तेरा काम, श्रीराम० ॥

(६३)

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भवभय-दारुणम् ।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनीलनीरजसुन्दरम् ।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि सुचि नौमि जनकसुतावरम् ॥ १ ॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानवदलन दुष्टनिकन्दनम् ॥
रघुनन्दन आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथनन्दनम् ।
सिरमुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अङ्गविभूषणम् ।
आजानु भुज सर चाप धर संग्राम जितखरदूषणम् ॥ २ ॥
इति वदति "तुलसीदास" शंकर-शेष-मुनिमनरञ्जनम् ।
मम हृदयकंज निवास करु कामादि-खलदल-गंजनम् ।
मन जाहि राच्यो मिलहिं सो वर सहज सुन्दर साँवरो ।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥ ३ ॥
एहि भाँति गौरि अशीष सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानी पूजि पुनिपुनि मुदित मन मन्दिर चली ।
सो०-जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जात कहि ।
मंजुल मङ्गल मूल बाम अङ्ग फरकन लगे ॥

(६४)

घड़ी दो घड़ी तो राम गुण गाया करो
गाया करो रे रिझाया करो ॥ टेक ॥
ज्ञान गुलाल सूरत पिचकारी
आत्मा के सङ्ग में समाया करो ॥ १ ॥
विषय वासना मन से हटाओ
आत्मा वृत्ती लगाया करो ॥ २ ॥
पांच कोश को न्यारो न्यारो
निश्चय कर बतलाया करो ॥ ३ ॥

६

दोऊँ कर जोर लागूं तव चरणां
सन्तों के दर्शन पाया करो ॥ ४ ॥
अलख अखण्ड भजो अविनासी,
भव दुख भव को हटाया करो ॥ ५ ॥
दोऊँ कर जोड़ लगूं तव सच्चा,
सत् गुरुजी को पाया करो ॥ ६ ॥
इङ्गला पिङ्गला सुषुमना साधो,
भृकुटि ध्यान लगाया करो ॥ ७ ॥
श्रवण, मनन, निदिध्यासन करके
समाधि अचल लगाया करो ॥ ८ ॥
तृष्णा वैरिन को दूर हटाओ
ज्योति में ज्योति मिलाया करो ॥ ९ ॥

भजन (९५)

मेरे नैनों में राम रस छाय रह्यो रे ॥ टेर ॥
जल बिच बाग बाग बिच बंगलो
बंगले में भंवर लुभाय रह्यो रे ॥१॥
जल बिच समुद्र समुद्र बिच मोती
मोति में झलक दिखाय रह्यो रे ॥२॥
जल बिच कमल कमल बिच कलियाँ
कलियों में भवर रिझाय रह्यो रे ॥३॥
"ललित - किशोरी" कहे कर जोड़ी,
दर्शन बिन जिया अकुलाय रह्यो रे ॥४॥

(६६)

हनुमानजी की लावणी

जयति जय जय बजरंग वाला कृपाकर सालासरवाला ।। टेक
चैत सुद पूनम को जनमे अंजनी पवन खुशी मन में
प्रगट भये सुर बानर तनमें विदित जस विक्रम त्रिभुवन में ।।
दूध पीवत स्तन मातके नजर गई नभ ओर।
तज जननी की गोद पहुँचे उदयाचलपर भोर ।।
अरुण फल लख रविमुख डाला ।। कृपा कर० ।।१।।
तिमिर भूमण्डल में छाये, चिबुक पर इन्द्र वज्र बाये।
तभी से बजरंग कहलाये द्वयं हनूमान नाम पाये ।।
उस अवसर पर रुक गयो पवन सर्व उनचास।
इधर हो गयो अंधकार उत रुक्यो विश्व को श्वास।
भये ब्रह्मादिक बेहाला ।। कृपा कर० ।।२।।
देव सब आये तुम आगे सकल मिल विनय करन लागे।
पवन कूं भी लाये सागे, क्रोध सब पवनतना भागे।
सभी देवता वर दियो अरज करी करजोर।
सुन के सब की अरज लरज लख दिया रवि को छोड़ ।।
हो गया जग में उजियाला ।। कृपा० ।।३।।
रहे सुग्रीव पास जाई, आगये वन में रघुराई।
हरी रावण सीता माई, विकल फिरते दोनों भाई।
विप्ररूप धरि राम को, कहा आय सब हाल।
कपि पति से करवाय मित्रता, मरा दिया रिपु बाल ।।
दुःख सुग्रीवतना टाला ।। कृपा० ।।४।।

आज्ञा ले रघुपति को धाया, लंक में सिंधू लांघ आया।
हाल सीता का लख पाया, मुद्रिका दे वन फल खाया।
वन विध्वंस दसकंध सुत, वध कर लंक जलाय।
चूड़ामणि संदेश सिया का, दिया राम को आय।
हुए खुश त्रिभुवन भूपाला ।। कृपा कर० ।।५।।

जोड़ कपि दल रघुवर चाला, कटक हित सिंधु बांध डाला।
युद्ध रच दीन्हों विकराला, कियो रावण कुल पैमाला।
लक्ष्मण के शक्ति लगी, लाये गिरी उठाय।
देय संजीवन लषन जिवाये, रघुवर हरष सिवाय।
गरब सब रावण का घाला ।। कृपा कर० ।।६।।

रची महिरावण ने माया सोवते राम लषण लाया।
वने वहां देवी की काया, करन को अपना चितचाया।
महिरावण रावण हत्यो, फेर हाथ को हाथ।
मंत्र विभीषण पाय आपको, हो गयो लङ्कानाथ।
खुल गया करमन का ताला ।। कृपा कर० ।।७।।

अयोध्या राम राज्य कीना, आपको दास बना लीना।
अतुल बल घृत सिंदूर दीना, लसत तन रूप रंग भीना।
चिरंजीव प्रभु ने कियो, जग में दियो पुजाय।
जो कोई निश्चय करके ध्यावै, ताकी करो सहाय।
कष्ट सब भक्तन का जाला ।। कृपा कर० ।।८।।

भक्त-जन चरण कमल सेवें, जात आय सालासर देवें।
धजा नारेल भोग टेवें, मनोरथ सिद्धि कर लेवें।

कारज सारो भक्त के, सदा करो कल्यान।
विप्र निवासी लछमनगढ़ के, "वालकृष्ण" धर ध्यान।
नाम की जपै सदा माला, कृपा कर सालासरवाला॥

प्रार्थना

अंजनी कुमार पुकार सुनो,
चहुं ओरन से अव आय वनी है।
कोऊ ऐसो नहीं जिससे जाय कहूँ,
सव को अपनी अपनी ही बनी है।
मेरी वेर न देर करो प्रभु,
देर की वेर तो और घनी है।
आप किसी के भरोसे रहोगे,
तो मोय अनाथ को कौन धनी है॥

(६७)

(तर्ज :—लावणी)

अंजनी के लाला देख्यो सालासर थारो देवरो ॥ टेर॥
पहली पोल थारी सबसूँ ऊँची, दूजी लंका कानी।
तीजी पोल पिछमाही झांके, चौथी सूरज साम॥ १॥
दूर दूर का आवे यात्री, सोने का छत्र चढ़ावे।
नित उठ थारे विप्र जिमावे, सुन्दर दरसन पावे॥ २॥
तीन वेर थारी होय आरती, वाजे नोबत बाजा।
मनवाञ्छित फल पावे यात्री पूरो सवके काज॥ ३॥
बाग बगीचा भोत बण्यां, थारे ठण्डो नीर।
"नरसी" ब्राह्मण गावे हित से, सब सन्ताँ को सीर॥ ४॥

(६८)

जयश्री सालासर हनुमान अनोखी थारी झांकी।
अनोखी थारी झांकी और महिमा थारी बांकी॥ जय
थारे कानां कुण्डल साजे, माथे पर मुकुट विराजे।
बाबा गले विराजे हार, अनोखी थारी झांकी॥ जय
थारे हाथां लाडू साजे, कांधे पर वृज विराजे।
बाबा रोम रोम में राम अनोखी थारी झांकी॥ जय
थारे पगां घूघरा साजे, चलबा का रिमझिम बाजे।
बाबा चलगत की बलिहारी, अनोखी थारी झांकी॥ जय
लक्ष्मण के शक्ति लागे, तब लेन सञ्जीवन भागे।
बाबा लायो पहाड़ उठाय, अनोखी थारी झांकी॥ जय
रावण न रामजी मारे, तब राज विभीषण पाये।
बाबा सीताजी से मिलाय, अनोखी थारी झांकी॥ जय
दूर दूर से यात्री आवे, चरणों में शीश नवावे।
बाबा हमारो संकट काट, अनोखी थारी झांकी॥ जय

(६६)

पवनसुत अब तक नहीं आयो,
आज देखो किसने भरमायो,
बाण लग्यो श्रीलखनलाल के
पड्यो धरण मुरझाय।
राम कहे सुन भ्राता मेरे
रोय मरे तेरी माय,

हाय दुःख कैसो दरसायो ॥ पवनसुत० ॥
देख दशा श्रीलखनलाल की, उठ बोले रघुबीर,
उठो रे भ्राता मुख से बोलो, कहाँ लग्यो तेरे तीर,
नीर नयनन से ढल आयो ॥ पवनसुत० ॥
तुम तो भैया सोय रहे तुझे खबर कुछ नांय
मेघनाद एक योद्धा रण में और लडैयान्
सङ्ग भोत ही दल लायो ॥ पवनसुत० ॥
कैसे जाऊँ अवधपुरी अपने रण को हार
लोग कहै त्रिया के खातर आयो भाई मरवाय
"दासतुलसी" ने यश गायो ॥ पवनसुत० ॥

भजन (१००)

मन पंछीड़ा रे कांई सूतो। सुख भर नींद ॥ टेर ॥
सूत्या-सूत्या क्या करोजी, सूत्या आये नींद।
काल सिराणे यों खड़ो जी तोरण आयो बींद ॥ १ ॥
नौबत हरि के नाम की रे दिन दस लेवो बजाय ॥
इण गलियां के चोबटे बन्दा फेरूँ मिलेगो नाय ॥ २ ॥
स्वांस स्वांस में हरि भजो वृथा स्वांस नहीं जाय।
कांई भरोसो स्वांस को जी फेरूँ आय की नांय ॥ ३ ॥
जैसे शीशी कांच की रे वैसी नर की देह।
जतन करन्ता जावसो रे हरि भज लावा लेय ॥ ४ ॥
"रघुवरदास" चरण को चेरो बिनवे बारम्बार।
ध्रुव प्रहलाद विभीषण तारया वैसे मुझको तार ॥ ५ ॥

गजल (१०१)

श्रीराम कहने का मजा जिसकी जवां पैर आ गया।
वो जीवनमुक्त हो गया चारों पदारथ पा गया॥ श्रीराम० ।१।
लूटा मजा प्रहलाद ने उस नाम के परताप से
नरसिंह हो दर्शन दिया त्रैलोक में जस छा गया ॥ श्रीराम० ।२।
जात की थी भीलनी उस नाम को सुमिरन किया,
परमात्मा घर आयके उस का फल खा लिया ॥ श्रीराम० ।३।
वाल्मीक बड़ा अधम था उस नाम का सुमिरन किया,
सात कोटि रामायण करके प्रभु पदारथ पा गया ॥ श्रीराम० ।४।
सतकोटी की तकसीम में जब शंभु ने पाया उसे,
जब कृपा उनकी भई सद्गुरु को दरशा दिया॥ श्रीराम० ।५।
सबसे बड़ा दरजा किया भक्तों का इस कलिकाल में,
नरसींग की हुँडी द्वारका में सांवरा सिकरा दिया ॥श्रीराम० ।६।
छा रही कीरति विमल ऋतुराज सी संसार में,
जनपामर प्रेमानंद "तुलसी" प्रेमरस वर्षा दिया ॥ श्रीराम० ।७।

(१०२)

॥ छन्द श्रीकृष्ण जन्म को ॥

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला, जसुमति के हितकारी।
हर्षित महतारी रूप निहारी, मोहन मदन मुरारी ॥१॥
कंसासुर जाना अति भय माना, पूतना वेगि पठाई।
सो मन मुसुकाई हर्षित धाई, गई जहाँ यदुराई ॥२॥
तेहि जाई उठाई हृदय लगाई, पयोधर मुख में दीन्हें।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसुकाई, प्राण तासु हरिलीन्हें ॥३॥

जब इन्द्र रिसायो मेघ बुलाये, वशीकरण ब्रज सारी।
गौवन हितकारी मुनिमनहारी, नखपर गिरिवर धारी ॥४॥
कंसासुर मारे अति हङ्कारे, वत्सासुर संहारे।
बकासुर आयो बहुत डरायो, ताकर वदन विडारे ॥५॥
तेहि अति दीन जानी प्रभु चक्रपाणी, ताहि दीन्ह निज लोका।
ब्रह्मासुरराई अति सुख पाई, मगन हुए गत शोका ॥६॥
यह छन्द अनूपा है रस रूपा, जो नर याको गावै।
तेहि सम नहि कोई त्रिभुवन माँही मनवांछित फल पावै ॥८॥
दोहा—नन्द यशोदा तप कियो, मोहन सो मन लाय।
तासों हरि तिन सुख दिये, बाल भाव दिखलाय ॥

(१०३)

भक्त की पुकार

मोय दर्शन दो भगवान आज मेरी अंखियाँ प्यासी रे।
रैन दिवस तेरी करूँ आराधना तूं घट-घट वासी रे।
तीन लोक में महिमा तेरी तूंही वेड़ा पार लगासी रे॥
मोह माया में फँस कर दुनियाँ मिथ्या भ्रम फैलासी रे। मोय।
ना कोई तेरा ना कोई मेरा ये सब नाटकबाजी रे।
मेरा-मेरा मत कर बन्दा ये तो यम की फाँसी रे। मोय।
लख चौरासी भ्रमत आयो बड़े भाग्य से मानव तन पायो रे।
करो भजन उपकार तपस्या कटे तेरी यम की फाँसी रे। मोय।
मोह माया से चित्त हटा कर जो हरि से नेह लगासी रे।
जन्म-मरण का फन्दा मिटा कर वो नर मुक्ति पासी रे। मोय।

तूं अगर खो दिया यह निरर्थक मानव देहि पाछे पछतासी रे।
लख चौरासी भटकेलो बन्दा तेरे कोई लार न जासी रे। मोय।
"रावत" ने लिया शरण आपका तूंही वेड़ा पार लगासी रे।
जो कोई इष्टदेव को हरदम स्मरण करता वोहि सत्यलोक को
वासी रे। मोय।

भजन (१०४)

(नानी बाई के भात भरने के लिये प्रार्थना)

ऐजी म्हारी अटकी अटकी अबकी नैया पार लगावोजी। १।
आज्यो साँवरिया हो नटवर नागरिया। टेक
एक दिन तो थारो भक्त साँवरा अरवपति कहलायो। २।
बालकपना में सुख भोग्यो करोड़ां द्रव्य लुटायो,
मैं आज बनी निर्धन की बेटी लाज बचावोजी ॥ आज्यो० ॥ ३ ॥
सासरियो दुश्मन बन्यो जी प्यारा बन्या वृजराज,
कपटभरी पाती लिखी कोई लेण पिताकी लाज,
देवरियो जिठाणी और नणदल नित की बाली बोले
देवरियो नारायणो म्हारो भरया घाव न छोले
म्हारा बाबाजीरी (बापूजी) विष्णुधर्म की लाज बचावोजी
॥ आज्यो० ॥ ४ ॥
सती द्रोपदी न थे समझी - समझी धर्म की भाण
सभा बीच में चीर बढ़ायो प्रभु राखी पाँडव कुल लाज
म्हारी लाज भी राखो साँवरिया यो हिवडो धारे धीर नहीं
मैं निर्भागण अबला हूँ म्हारे जामण जायो वीर नहीं
नानी बाई की लाल बाई न लाल चुनड़ी आय उढावोजी
॥ आज्यो० ॥ ५ ॥

(१०५)

॥ नरसीजी का माहेरा (लावणी)

और आसरो छोड़ आसरो ले लियो कुँवर कन्हाई को।
हे वनवारी आज माहेरो भरजा नानी बाई को ॥टेर॥
असुर-संहारन भक्त-उधारन चार वेद महिमा गाई।
जहँ-जहँ भीर पड़ी भक्तन पै तहँ-तहँ आप करी सहाई।
पृथ्वी लाकर सृष्टि रचाई वराह होय सतयुग माँही।
असुर मार प्रहलाद उवार्‍यो प्रगट भये खम्भे माँही॥

वामन होय बलि को छल लियो कीन्हों काम ठगाई को ॥ १ ॥
मच्छ कच्छ अवतार धार कर सुर नर की मनसा पूरी।
अर्ध नाम गजराज पुकार्‍यो गरुड़ छोड़ पहुँचे दूरी।
भस्मासुर को भस्म करायो सुन्दर रूप बने हरी।
नारद की नारी ठग लीन्हीं जाकर आप चढ़ै चूँरी।

असुरन से अमृत लै लीन्हों वन कर भेष लुगाई को ॥ २ ॥
परशुराम श्रीरामचन्द्र भये गौतम की नारी तारी।
भिलनी के फल मीठे खाये शंका त्याग दई सारी।
करमा के घर खीचड़ खायो तरी अधम गणिका नारी।
छल कर तर गई नारि पूतना, कुब्जा भई आज्ञाकारी।

सेन भगत का साँसा मेट्या रूप बना कर नाई को ॥ ३ ॥
नामदेव रैदास कबीरो धना भगत को खेत भर्‍यो।
दुर्योधन का मेवा त्याग्या साग विदुर घर पान कर्‍यो।

प्रीत लगाकर गोपी तर गई मीरा जी को काज सर्‌यो।
चीर बढ़ायो द्रुपद-सुता को दुःशासन को मान हर्‌यो।
कहे "नरसीजी" सुन साँवरिया कर ले काम भलाई को॥ ४॥

भजन (१०६)

(तर्ज—लावणी)

गढ़ लंका माहि आई असवारी राजा राम की।। टेर।
कहत मन्दोदरी सुन पिया रावन, या काँई कुवद कमाई।
उनकी जानकी ने तुम हर लाए, वे चढ़ आए दोउ भाई॥१॥
तू क्यों डरपे नार मन्दोदरी, पीहर देऊँ पहुँचाई।
एक बार सनमुख होय लड़स्यूँ, जग जग होय बड़ाई॥२॥
कहत मन्दोदरी सुन पिया रावन, सपनो बिसवा बीस।
कूदत देख्या बानरा जी, टूटत देख्या दस शीश॥३॥
तिरिया जाति बुद्धि की ओछी, उनकी करत बड़ाई।
भूमण्डल से पकड़ मँगाऊँ, वे तपसी दोउ भाई॥४॥
हनुमान से पायक उनके, लक्ष्मण से बलभाई।
जलति अगनि में कूद पड़त है, कोट गिने ना खाई॥५॥
मेघनाद से पुत्र हमारे, कुम्भकरण से भाई।
लंका सरीसे कोट हमारे, सात समुद्र आडी खाई॥६॥
रावण मार राम घर आए, घर घर बंटत बधाई।
मात कौशल्या करत आरती, "तुलसीदास" जस गाई॥७॥

---

(१०७)

(रंगत लंगड़ी)

सेंर। ब्रह्मकी पृथ्वी रच्योड़ी दैत्य ले गयो चोरके॥
असुर मार्‍यो धरा ल्यायो वराह बण मगठोरके।
गरुड़ तजकर नाथ तुम गजकूं उवार्‍यो दौर के॥
वैसी ही जानो पीर मेरी मैं कहूं कर जोरके॥ १ ॥टेक॥
ज्यूं गिरराज ध्यार लियो नखपर ज्यूं दरवाजो धार्‍योजी।
हे गिरधारी आज मेरी नाव डूबती त्यारोजी॥
जलती अगनी देख आवां बिच मंझारीसुत घबराया।
तेरी रजासै पक्या बरतन बीच वे जीवत पाया।
प्रहलाद भगत कै काज सिंह बण एक पलक में तुम आया॥
असुर मारकर संतनै राजतिलक थे बैठाया॥ सैर॥
आपही होके परबल देव थे ग्यान माताकूं दिया।
आपही बन पृथू नृपकूं नरकसै न्यारा किया॥
वेद ब्रह्माजी तणां एक दैत्य च्यारूं चुरालिया।
आप हो हयग्रीव पहुँच्या प्राण पाजीका लिया॥
वेद ल्याय ब्रह्मानै दीना जिनसे ग्यान उजारोजी॥ २ ॥ हेगिर० ॥
हरिबल बामन परसराम बन जग माई जस थे लीनूं॥
कच्छमच्छ होय काम कीनां सो प्रभु मैं सब चीनूं।
हे रघुबीर मार लियो रावण राज विभीषणकूं दीनूं॥
कृष्णरूप कर कंस निरबंस कियो त्रिभुवन भानूं॥ सैर॥
क्या करूँ तारीफ तुमतो बिड़द जीत्या है कई।
बहोतसा थे मार राक्षस बड़ाई जगमें लई॥

असूरनी विष लगा कुचके कोपके तुमपै गई ।
खींच आंचल थे सिंघारर मुक्त पदवी फिर दई ॥
मैं भी ओट आपकी लीनी जीत्यो बिड़द मत हारोजी ॥
॥ २ ॥ हेगिर० ॥

गहरा जलमें कूद निरंजन नाग नाथलीनूं काली ॥
नाग फनांकी फनाही निरत कियो थे बनमाली ।
भारतमें भर तूल कारणैं गजघण्टा तोड़ डाली ॥
मेरे पिवकी सहाय कर वैसैंही वणकर बाली ॥ सैर ॥

जलमें दिखकर रूप तुमही अक्रूरकी चिंत्या हरी ।
अवतार लखकर तात भ्राता हिये बिच धीरज धरी ॥
चन्दन लगायो कूबरी जब नाथ तुम मनस्या भरी ।
ददासरीसी देहकूं कर नेह तुम सीधी करी ॥
वैसी ही पीर जानकर पिरभु मेरी पीर उबारोजी ॥ ४ ॥ हेगिर०॥

मेरे गुरु विवेकी पण्डित्त हरिदत्तजी आनन्दकारी ।
गुण बतलाकर खरी कहूँ भरी गुरु मनस्या म्हारी ॥
स्योब्रक्षराम मुरसद गुणसागर जाणत जिनकूं संसारी ।
गोविन्दराम गुरु ज्ञान दिया भान उगाया बनवारी ॥ सैर ॥

गुरुकी सेवा करेसूं नांव चेला पावता ।
हुकुम माफिक चले तो गुण भी उसीकूं आंवता ॥
सीख सुगरा अजब एलम सभा में अजमावता ॥
लोग दी स्याबास सूण भुगरा निरजल चक्रावता ।
"नानूलाल" कहे ऐसे म्हारी बिपता नाथ बिडारोजी ।५। हेगिर० ॥

(१०८)

रसिया

इकली घेरी बन में आय श्याम तैंने कैसी ठानी रे। टेर।
श्याम मोय वृन्दावन जानो, लौट के बरसाने आनो,
मेरी कर जोरे की मानो, जो मोय अबेर लड़े घर
ननद जिठानी रे ॥ इकली घेरी० ॥१॥
दान दधि को तू दै जो मोय, जभी ग्वालिन जाने देऊँ तोय,
नहीं तकरार बहुत सी होय, जो इन्कार करे होय तेरी
ऐंचातानी रे ॥ इकली घेरी० ॥२॥
दान हम कबहुँ नांय दीन्हो, रोक मेरा मारग क्यों लीन्हों,
बहुत सो उधम है कीन्हो, आज तलक या व्रज में कोई
भयो न दानी रे ॥ इकली घेरी० ॥३॥
ग्वालिन बातें रही बनाय, ग्वालबालन को लेऊं बुलाय,
तेरो दधि माखन देऊं लुटवाय, इठलावे हर बार नार तोय
छायी जवानी रे ॥ इकली घेरी० ॥४॥
कंस राजा पर करूँ पुकार, मुशक बंधवाय दिलाऊँ मार,
ठकुराई देसी निकार जुलम करे नहिं डरे है रे तू
नार बिरानी रे॥ इकली घेरी० ॥५॥
कंस का बाप लगे तेरो, वह तनह करे मेरो,
कोउ दिन मार करों ढेरो, करूं कंस निरबंस मेट देऊँ
नाम निशानी रे ॥ इकली घेरी० ॥६॥
करी लीला जो श्यामा-श्याम कौन बरणन कर सके तमाम,
करूँ बलिहारी धन्य व्रजधाम, कहे "घासीराम" नन्द को
है सेलानी रे ॥ इकली घेरी० ॥७॥

भजन (१०६)

श्याम सुन्दर की देख छटा, मैं हो गई सजनी लटा पटा ।।टेर।।
मैं जल यमुना भरने जात री, मारग रोकत नहिं हटा ।
झट पट मेरी बैंया मरोड़ी, बिखर गया मेरा केश लटा ।।१।।
मैं दधि वेचण जात वृन्दावन, मारग रोकत नाहिं हटा ।
बैंया पकड़ मोरि मटकी फोड़ी, बिखर गया मोरा दही मठा ।।२।।
सास श्वसुर मोहे बुरी बतावे, नणदल बोले बोल खटा ।
श्याम बिहारी कोई बात न पूछे, सखियन में मेरा मान घटा ।।३।।
घूँघरवाले बाल श्याम के, मानो जैसी इन्द्रघटा ।
"सूरश्याम" प्रभु के गुण गावे, राधे कृष्णा रटा रटा ।।४।।

राणी सती दादी की स्तुति (११०)

हो रही जै जैकार, दादी जी थारे मन्दिर में,
कर जोड़ करे अरदास, दादी जी थारे मन्दिर में ।
झूंझनू नगर में आप विराजो, महिमा अमित अपार ।।दादी०।।
ऊंचा शिखर बना मन्दिर का ध्वजा रही फहराय ।।दादीजी०।।
रतन-जड़ित सिंहासन सोहे, ऊपर छत्र हजार ।।दादी जी०।।
माथ पर थारे टीको सोहे, ऊपर छत्र हजार ।।दादी जी०।।
अंग कसूमल कवजो सोहे, गल हीरां को हार । दादी जी० ।
कानां में थारे कुन्डल सोहे लाल चूड़ो थारे हाथ । दादी जी० ।
बांयामें थारे बाजूबन्द सोहे मेंहदी की लग रही वहार ।
बहार दादी जी थार हाथ में ।। दादीजी० ।।
शिर पर तो थारे चूदड़ी सोहें मांय तारी को जाल
दादी जी थारी चूंदड़ में । यारे ही ।

खीर पूड़ा और पेड़ा नारियल मोदक भर-भर थार। दादी जी।
शंख मृदङ्ग नंगारा बाजे झांझर की झन्कार। दादी जी।
भादो मावस मेला लागे दुनिया आव सूमार। दादी जी।
जात जडूला करता कोई-कोई करे जै-जैकार। दादी जी।
कोई मांगे पुत्र अरु नारी किसी की नैया पड़ी मझधार। दादीजी।
अंधे को अँखिया कोढ़ी को काया, बांझने दो कुमार। दादीजी।
महर की अंखिया यदि हो जावे नैया होवे पार। दादीजी।
उपमा को कछु अन्त नहीं है, जाऊं मैं बलिहार। दादी जी।
ये सब भक्त शरण आये हैं कर दो बेड़ा पार। दादी जी।
"नारायण" मा अरज करत है हरलो भूमि भार। दादी जी।
हो रही जै-जैकार दादीजी थारे मन्दिर में।

स्तुति—(१११)

मात श्री राणी सती मेरी कष्ट कर दूर भक्त केरी।
पाँव मैं पड़ूं मात थारे, क्षमा कर चूक भई म्हारी॥
अनेकों विघ्न आप टारे, कार्य निज भक्तन के सारे।
दोहा—दोऊ कर जोड़े मैं खड़ा, जननी थारे द्वार।
दुखित दीन जानकर मुझको जराक पलक उघार॥
कृपाकर बिलखत भई देरी—मात०॥ १॥
कहत हैं सिद्ध मुनी ज्ञानी, तुम्हां जगदम्बा राजरानी।
मूक है कवियन की वाणी, महिमा जात नहीं जानी॥
दो०—अखंड ज्योति प्रकाश है, व्यापक सकल जहान।
सुन्दर मन्दिर रम्यशिखर जांकी, ध्वजा उड़े असमान॥
बजे हैं शंख तुरी भेरी—मात०॥ २॥

गरुड़ चढ़ कमलापति आये, सुदर्शनचक्र साथ लाये।
ग्राह से गज को छुड़वाये, विमल यश तिहुँलोक छाये।
दो०—आप मात उस रीति से, सिंह सवारी साज।
आवो आतुर राखो अपनी शरण पड़े की लाज॥
लखूं मैं सौम्य सूरत थारी मात० ॥ ३ ॥
भयानक तूफान दिया घेरा, दिखत हैं उलट पुलट बेरा।
निगाह से चीत लो हेरा, आप बिन कोई नहीं मेरा।
दो०—भवनिधि घोर तरंग से बच्यो न कोई भाव।
"त्रिलोकचन्द" दयाकर मैया, भक्त बचावन आव॥
नाव मँझधार पड़ी मेरी—मा०

होली (११२)

सांवरा होली खेलो रे।
राधा करे पुकार श्याम थे होली खेलो रे।
मोर मुकुट कट काछनी, कर मुरली यदुराय।
श्याम सुन्दर मेरे मन बसो, सदा बिहारीलाल।
कान में कुण्डल सोहे,
गल वैजन्तीमाल देखकर कोटि काम मोहे ॥१॥
बंसी वाले मोहना बंसी नेक बजाय।
तेरी बंसी मेरे मन बसी हृदय बीच समाय।
लगी हैं श्रवण की आशा।
मीरा के घनश्याम मिटा दो तन मन की प्यासा ॥२॥
उड़त गुलाल-लाल भये बादल; केशर रंग सोहे।
श्याम सुन्दर को देख, राधा को मन मोहे।

पीत रंग पीताम्बर सोहे,
कोटिभानु परकास देखकर त्रिभुवन मन मोहे ॥३॥
आवो पियारे मोहना, पलक झाँप तोहि लेऊं,
आप बिन चैन न गिरधारी,
तरसत हैं दिन रैन राधिका संग सखियाँ सारी ॥४॥
मोर मुकुट की लटक पर, अटक रहे द्दग मोर।
कान्ह कुंवर सखि यमुना तट, नटवर नन्दकिशोर।
या मैं थारी सूरत पर वारी,
लम्बी प्रीत की वाण दरस किन व्याकुल नर नारी ॥५॥
कमलन को रति एक है रति को कमल अनेक।
मनसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको एक।
श्याम बिन व्रज सूनो लागे,
सूनो तीर कुञ्ज यमुना को, सब सूनो लागे ॥६॥

भजन (११३)

धमाल

सुमरन कर राम जन्म दियो है ॥टेर॥
कान दिया रे तने कथा सुनन को
दर्शन करबान नैन दिया ॥१॥
जीव दई तने नाम रटण ने,
नवावन को शीश दियो ॥२॥
हाथ दिया रे तने दान करण ने
तीर्थ करवाने पाँव दिया ॥३॥
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो,
हीरोसो जनम गमाय दियो ॥४॥

होरी धमार (११४)

पायो ना ए श्याम बहुत डोली पायो ना ।।टेक।।
एक वन ढूंढ्यो सकल वनढूंढ्यो कोयल बन बन बोली ।।१।।
गोकुल ढूँढ़ वृन्दावन ढूँढ्यो ढूँढ़ लियो टोली टोली ।।२।।
एक दिन कृष्ण मिलो कुंजन में मैं पापिन मुखसे ना बोली ।।३।।
"चन्द्रसखी" भज बालकृष्ण छवि, श्याम विना कैसी होली ।।४।।

धमार (११५)

पनघट को श्याम बड़ो रसियो पनघट को ।।टेक।।
लता कुंज में छिप गयो मोहन, गोपियन रोज दिखत तसियो ।१।
सब सखियाँ जल भरन चाली, मोहन में वाँको मन फँसियो ।२।
हंस हंस बात करे मनमोहन, गागर फोर श्याम हंसियो ।३।
"राम सखी" चरणन की दासी, प्यारे में वांको दिल फँसियो ।४।

होली की गाली (११६)

भरवादे मदन गोपाल, पाणिड़ो भरवादे ।
भरवादे नन्दजी रा लाल, पाणिड़ो भरवादे ।।
मत रोके घाट गोपाल, पाणिड़ो भरवादे ।।१।।
मैं जल भरवा कारणेजी, आई घर सूँ चाल ।।
नित को जमुना रोक कर बैठ्यो, या काँई थारी चाल ।
जै तूँ जानेछै आई छूं एकली, सात सहेलिया के साथ ।।
सिर पर घड़ो घड़ा पर मटकी, पतली कमर बल खाय ।।३।।
गागर म्हारी गिर जावेगी, बैयां न मरोड़ो नन्दलाल ।।
घराँ लड़ेगी सास हमारी, कोइ नणदल देगी गाल ।।४।।

चेवड़ छेवड़ पानी गदमलो, कोई बीच मैं नन्दजी को लाल ॥
"चन्द्रसखी" भज बालकृष्णछवि-हरी के चरण में मेरो ध्यान ॥५॥

भजन—(११७)

छोटो सो कन्हैयो कालीदह पर खेलन आयो री ॥टेर॥
काहे की पट गेंद बनाई, काहे का डण्डा ल्यायो री ॥१॥
फलन की पट गेंद बनाई चन्दन डण्डा ल्यायो री ॥२॥
देतहि ठोकर गिरि जमुना में, गेंद साथे धायो री ॥३॥
नाग नाथ कर बाहर आए, फँण फँण निरत करायो री ॥४॥
'पुरुषात्तम' प्रभु की छवि निरखे चरण कमल में आयो री ॥५

धमाल (११८)

मानत ना यशोदा तेरो बनवारी मानत ना ॥टेक॥
घरका तो छोड़्या माखन मिसरी, गुजरी की छाछ लगे प्यारी ॥१॥
घर का पलंग जड़ाऊ छोड़्या, कुबजा की खाट लगे प्यारी ॥२॥
घर का छोड़्या शाल दुशाला, कुबजा की गुदरी लगे प्यारी ॥३॥
"चन्द्रसखि" भज बालकृष्ण छवि, चरणकमलकी बलिहारी ॥४॥

धमाल (११६)

कैसे आऊँ रे सांवरिया थारी ब्रज नगरी कैसे आऊँ रे ॥टेर॥
तेरी नगरी में कीच बहुत है, पाँव चलूं भीजे घघरी ॥१॥
तेरी नगरी में यमुना बहत है, पनियां भरन आई सगरी ॥२॥
तेरी नगरी में दान लगत है, श्याम करे झगरा झगरी ॥ ३ ॥
तेरी नगरी में फाग मच्यो है मोहन रोक लई डगरी ॥४॥
लाल गुलाल के बादल छाए, केशर रंग भरे गगरी ॥५॥
भर पिचकारी मारत मोहन, चुनरी भीज गई सगरी ॥६॥

मोपर तो रंग हँस हँस डारत, मोहन आप गयो भगरी ॥७॥
"रामसखी" तुमरो यश गावे, हृदय धरूँ तुमरी पगरी ॥८॥

(१२०)

श्यामा-श्याम

जय माधव मदन मुरारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ।
जय केशव कलिमल हारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
सुन्दर कुण्डल मुकुट विशाला, गल सोहे वैजन्ती माला ।
या छवि की बलिहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
कबहूँ लूट लूट दधि खायो, कबहूँ मधुवन रास रचायो ।
नृत्यति बिपिन बिहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
ग्वाल बाल सङ्ग धेनु चराई, वन २ भ्रमत फिरे यदुराई ।
काँधे कामल कारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ।
चुरा चुरा नवनीत जो खावो, ब्रज बनिता पै नाम धरायो ।
माखनचोर मुरारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
एक दिन मान इन्द्र को मार्‍यो, नख ऊपर गोबधंन धार्‍यो ॥
नाम पर्‍यो गिरधारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
दुर्योधन को भोग न भायो, रूखा साग विदुर घर खायो ।
ऐसे प्रेम पुजारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
करुणा कर द्रोपदी पुकारी, पट में लिपट गयो बनवारी ।
निरख रहे नर नारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
अर्जुन के रथ हाँकन हारे, गीता के उपदेश तुम्हारे ।
चक्र सुदर्शनधारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥

भक्त अभक्त सभी तुम तारे, भक्तिहीन हम ठाड़े द्वारे।
लीज्यो खबर हमारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
तुम बिन और कहाँ मैं जाऊँ, औरन ते कहते सकुचाऊँ।
सुनो दीनदुःखहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥
अब तो सुनो टेर तुम मेरी, शरणागत अब करो न देरी।
रटना लगी तुम्हारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥

स्तुति (१२१)

शिव आये यशोदा के द्वार मात मोहे दर्शन करा।
मेरा सोया हुआ है गोपाल बाबा ले भिक्षा जा ॥ शिव ॥
कैलाश पर्वत से आया मैं माता,
तेरे घर में जनमा है जग का विधाता
बिनती करूँ बार बार मात मोहे दर्शन करा ॥ मेरा० ॥
बाबा तेरे गल में है सर्पों की माला,
जिसे देख डर जायेगा मेरा लाला।
हठ ना करो बार बार बाबा ले भिक्षा जा ॥ शिव० ॥
डरता है जिससे जगत मा ये सारा,
उसे क्या डराऊँगा मैं एक विचारा।
दर्शन की महिमा अपार मात मोहे दर्शन करा ॥ मेरा० ॥
बड़े भाग से ये दिन मेरे घर में आया,
बीती उमरिया में बेटा जो पाया।
वन्दन करूँ बार बार, बाबा ले भिक्षा जा ॥ मेरा० ॥

बेटा समझती है जिसको तू माता,
वोही तो है सारे जग का विधाता।
लीला है अपरम्पार, मात मोहे दर्शन करा॥ मेरा०॥
डरती यशोदा मैय्या अन्दर को धाई,
गोदी में अपने कन्हैया को लाई।
देवों ने की, जय जयकार, मात मोहे दर्शन करा॥ मेरा०॥

भजन (१२२)

बोल हरि बोल हरि हरि हरि बोल।
जीवन की घड़ियाँ अनमोल ॥टेक॥
नाम प्रभु का है सुखकारी पाप कटेंगे क्षण में भारी
ना लगेगा कुछ तेरा मोल ॥१॥
शबरी अहल्या सदन कसाई नाम जपन में मुक्ति पाई
नाम की महिमा है वेतोल ॥२॥
जो चाहे भवसागर तरना मिटजावे जीवन और मरना
पाप की गठरी सिर से खोल ॥३॥
दुनियाँ है यह गोरखधन्धा भेद समझता है कोई बन्दा
ब्रह्म स्वरूप तराजू तोल ॥४॥
गोविन्द माधव कृष्ण मुरारी नटवर नागर गिरिवर धारी
नाम का अमृत पी नित घोल ॥५॥
सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

भजन (१२३)

जानकीनाथ सहाय करैं तव कौन बिगाड़ करै नर तेरो ॥टेर॥
सूरज मंगल सोम भृगुसुत बुद्ध गुरू वरदायक तेरो ॥
राहू केतु कदे नहीं व्यापै मोटो ग्रह रहे रक्षक तेरो ॥१॥

जब २ भीर पड़ी भक्तन पर तब २ आय विपति निरवेरो ।
भारत में भरुही के अण्डा तिनषर गज को घण्टा गेरयो ॥
दुष्ट दुस्सासन निबल द्रोपदी चीर उतारन मंतर प्रेरयो ।
ताकी सहायकरी नारायण बढ़ि गयो चीर अनन्त घनेरो ॥
गज पर भीर पड़ी जल भीतर नाम हरी को मुख से टेरयो ।
आकर बन्दि छुड़ाई पलमें "तुलसीदास" चरणन को चेरो ॥

॥ बरवा ॥

भजन (१२४)

मन वृन्दावन चाल बसो रे मान घटे चाहे लोग हँसो रे ।।टेर।।
गुरु बिन ज्ञान गङ्गा बिन तीरथ एकादशी बिन बरत किसो रे
तन मन मिल गया पड़दो किसोरे ।
बालू की भींत अटारी को चढ़बो, ओछे की प्रीत कटारी को खाबो
मन न मिले जासों पड़दो किसोरे, प्रीत करी जांसों पड़दो
किसो रे
गृह बिन दीप छतर बिन राजा पूत बिना परिवार किसो रे
चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि जा के चरण मन यो फँस्यो रे
नन्द को गुमानी मेरे हिवड़े बसो रे ॥

भजन (II)

हम जाने हमहीं पर बीती एक दिना सबही पर बीती ॥ टेर॥
सूर्यचन्द्र आकाश के राजा ग्रहण लग्यो तिनहूँ पर बीती
राम लखन जब बन को सिधाये सीय हरी तिनहूँ पर बीती
द्रुपद सुता को चीर दुस्सासन खैंचे सभा में तिनहूँ पर बीती
"सूरश्याम" सबही पर बीतै नैन गये हमहूँ पर बीती ।

भजन (III)

भजु भगवंत एकांत मता रे सिर झुकि आई काल घटा रे ।।टेर।।
कोई भजै वाकूँ टूटी टपरिया कोई भजै चिणवाय अटा रे
कोई भजै वाकूँ मूँड मुँड़ाकर कोई भजै सिर राखि जटा रे
कोई भजै सिर संकट छाये कोई भजै सुख साज छटा रे
कहत "कमाली" कबीर की बाली कोई न लायो अमर पटा रे

भजन (१२५)

गोविन्दा नहि गायो क्यूं तैने के कुमायो बावरे ।।टेर।
ऊँचा नीचा महल चिणाया ताम्बावरणी पोल रे
हरि नाम बिना सुन प्यारे जन्म मचावे रोल रे ।।१।।
ऐरण की चोरी करे करे सूई को दान रे
ऊँचो चढ़कर देखन लाग्यो कितीक दूर विमान रे ।।२।।
भस्म रमाकर साधू बन गया वृथा मुंड़ायो मूँड़ रे
भेष लजायो लालच के वश पड़े नरक के कुराड रे ।।३।।
कागज की तो नाव बनाई उतर्यो चाहैं पार रे
कहत "कबीर" सुन भाई साधो डूबेगी मझधार रे ।।४।।

भन (१२६)

दयानिधि तोरी गति लखि न परै ।
धन से धर्म, धर्म से अधरम कुकरम कर्म करै ।।टेर।।
पिता वचन टालै सो पापी सो प्रह्लाद करै ।
ताकि बन्दि छुड़ावन को प्रभु नरहरि रूप धरै ।।१।।
एक गऊ जो देत विप्र को सो भवसिंधु तरै ।
कोटि गऊ राजा नृग दीन्ही गिरगिट हो कूप परै ।।२।।

गुरु वसिष्ठ अति गुणआगर रचि रचि लगन धरै।
सीता हरण मरण दशरथ को विपति में विपति परै ॥३॥
वेद विविध तेरो यश गावे सो बलि यज्ञ करै।
ताको बाँधि पताल पठायो कैसे "सूर" तरै ॥४॥

भजन (१२७)

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥टेर॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब दोनों मिल एक बरण भई सुरसरि नाम परो ॥१॥
इक लोहा पूरा में राखत इक घर बधिक परो।
कछू भेद पारस नहिं राखत कंचन करत खरो ॥२॥
एक करे गऊ की नित पूजा काटत एक गरो।
सो दुविधा गउ मन हिं राखत देवत दूध खरो ॥३॥
इक माया इक ब्रह्म कहावत 'सूरश्याम' झगरो।
दुखिया को निर्वाह करो प्रभु नहिं प्रण जात टरो ॥४॥

॥ रंगत माहेरा ॥

भजन (१२८)

दोहा—गद्गद वाणी रुदन कर नरसी करुणा कीन
चौंक उठे हरि नींद से भक्तों के आधीन ॥
जब नरसीजी ने करुणा करी
द्वारिका में सूता हूता औ जग्या हरी।
रानी तो रुकमणी खम्मां २ ही करे
मोतीड़ाँरो थाल भरके आरतो करे॥

काँई तो सेवा में स्वामी चूक पड़ी
काची तो नींदाँ में सूत्या औजग्या हरी।
म्हारा तो भगताँ में रुकमण भीर पड़ी
माहेरो ले जानो म्हाने इणरी घड़ी॥
राधा तो रुकमणी दोनूँ जोड़ें हर के हाथ
माहेरो भरो तो म्हाने लेकर चालो साथ।
सैंजोड़े भराँला थे तो सुणज्यो रणछोड़
भगताँ को माहेरो देखाँ आवे म्हाने कोड़॥
थारा तो मनमाँही रानी जरेली नाईं
नेग तो करणां छै म्हाने सगाँ की नाईं।
नरसी का सगा छै जिका आपणा सगा
बूढ़ली व्यावण के पड़सी लागणो पगाँ॥
थे तो यूँ जाणोला रानी म्हारे पती श्याम
नानी बाई री सासू आगे करणो पड़सी काम।
नानीबाई के नहीं छै जलम देणी माय
उणसूं थाने मिलनो पड़सी हियड़े लगाय॥
दिवराण्याँ जिठाण्याँ ने थे जीकारा दीज्यो
नानीबाई की ननदूली से डरताई रीज्यो।
इतना तो थे म्हासूं पहल्याँ कौल करो
मोटी व्यावणजी रे आगे पाणीड़ो भरो।
बाणियाँ बणियाणीं हन्दो कर लीज्यो रूप
कोई न पिछाणें म्हे छाँ द्वारका रा भूप॥

जावो जी गिरधारी ल्यावो माहेरो मुलाय
कहस्यो ज्यूँ म्हें करस्याँ थे तो दीजो फरमाय।
महँदी मोली कर ऊबटनो माथो चोटी न्हाय
म्हे तो म्हारी त्यार वैठी म्हापरसादी पाय॥
दोहा—परकर सहित पधारिया त्यार हुआ रणछोड़।
सौंज लई सब सौधि के कर कर मन में कोड़॥
सकल सौंज भेली करी धरी जु भर भर वांथ।
सुखसारन गाडा भरें हरिजी अपने हाथ॥

भजन (१२६)

॥ पद कबीरदास ॥

ऊधो जी कर्मन की गति न्यारी॥ टेर॥
ताल तलैयन में मीठो जल समदर कर दिये खारी।
सुन्दर रूप दियो बगुला कूँ कोयल हो रही कारी॥१॥
नागर बेल फलै नहिं फूलै काचर वेल हजारी।
चातुर नारि पुत्र बिन तरसै फूहर जन जन हारी॥ २॥
वेश्या शाल दुशाल ओढ़े पतिव्रता फिरत उघारी।
मूरख राजा राज करत हैं पण्डित फिरत भिखारी॥ ३॥
छोटे २ नैन मिले हाथी कूं रण में रहत अगारी।
बड़े २ नैन दिये मिरगा कूं बन बन फिरत उजारी॥ ४॥
हमको जोग भोग कुबजा को हम नित रहत दुखारी।
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो भावी टरत न टारी॥ ५॥

भजन (१३०)

॥ फुटकर भजन ॥

हरि भज हरि भज हीरा परखले समझ पकड़ नर मजबूती।
अष्ट कमल पर खेलो मेरे दाता और बारता सब झूठी ॥टेर॥
घरहर घरहर मेहा गरजे सोहं सोहं क्या होती।
तरवेणी के रंगमहल में हंसा चुग रह्या निज मोती ॥ १ ॥
सत सुमिरण की खड्ग बनाकर ढाल बनाले धीरज की।
काम क्रोध को मार हटा दे जब जानूं तेरी रजपूती ॥ २ ॥
पाँच चोर काया नगरी में जिनकी पकड़ कसकर चोटी।
पाँचान मार पचीसांन बस कर जब जानूं थारी बुध मोटी ॥ ३ ॥
पकी धड़ी का तौल बना ले काण न राखे पाव रती।
कहे "मछन्दर" गोरख आया अलख लखा सो खरा जती ॥ ४ ॥

भजन (१३१)

पापी के मुख से राम नहिं निकले केशर ढुल गई गारां में।
मिनख जमारो तेरो ऐलो मत खोवे सुकृत करले जमारां में ॥टेर॥
काँच का महल में कुतिया ने सुवाय दी रंगमहल चौबाराँ में।
एक एक काँच में दोय दोय कुतिया घुस घुस मरी जमारां में ।१।
भैंस पदमणी ने हार पहराय दियो
वा काँई जाणे नौसर हाराँ ने।
पहर नहीं जाने वा तो ओढ़ नहीं जाने।
जलम गमायो गोबर गारां में। २।
सोना का थाल में सूरड़ी न परस्यो
वा काँई जाने जीमणवाराँ ने।

जीम नहीं जाने वा तो जूठ नहिं जाने
हुरड़ हुरड़ करी जमारां ने। ३।
हीरा ले मूरख ने दीन्हा दलबा बैठ गयो सारां ने।
हींरा की कदर तो जौहरी जाने काँई तोल गँवाराँ ने ॥ ४॥
राम नाम की ढाल वना लो दया धरम तलवाराँ ने।
"अमरनाथ" कहे भक्तों से जव जीतो यम द्वाराँ ने ॥ ५ ॥

भजन (१३१)

मुखड़ा क्या देखे दरपनमें तेरे दयाधरम नहिं तन में ॥टेर॥
कागज की एक नाँव बनाई छोड़ी जाकर जल में।
धरमी धरमी पार उतर गये पापी डूबे पल में ॥ १ ॥
पेंच मारकर पगड़ी बाँधे तेल डाल जुलफन में।
इसी बदन पर दूब उगेगी गऊ चरेगी बन में ॥ २ ॥
हाथ कड़ा कानों की बाली लें उतार पल छन में।
काची काया काम न आवे नंगी परे आंगन में ॥ ३ ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी खोद धरी आँगन में।
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो रह जाय मनकी मनमें ॥ ४ ॥

भजन—(१३२)

(तर्ज :—मारवाड़ी)

दरसण दीजोजी मीराँ ने ठाकुर मेडते ॥टेर॥
मीराँ गढ़ सूँ उतरी राणा, ऊँटा कसियो भार।
डाबो छोड्यो मेडतो मीराँ, सीधी पुष्कर जाय ॥ १ ॥
रमती न मिलग्यो कांकरो मीराँ, सेया शालिगराम।
तन मन से सेवा करे मीराँ, चारों वेद निदान ॥ २ ॥

सासरिया में सुख नहीं मीराँ, सासू नणद सतावे।
एक उठाऊँ दोय बतावे, थारी म्हारी करता जावे ॥ ३ ॥
एक कुल लाजे आपणो मीराँ, दूजो वंश राठौड़।
तीजो लाजे मेडतो मीराँ, चोथो गढ़ चित्तौड़ ॥ ४ ॥
एक कुल तारूँ आपणो राणा, दूजो वंश राठौड़।
तीजो तारूँ मेडतो राणा, चौथो गढ़ चित्तौड़ ॥ ५ ॥
मीराँ हरिकी लाड़ली जी, भजन किया भरपूर।
साधां की संगत करी मीराँ, पापी से पग दूर ॥ ६ ॥

भजन—(१३३)

(मारवाड़ी)

ठाकुर नन्दजी का लाला मैं तो फेरूँ थारी माला।
इतना म्हांसूं घाट करे तो या ले थारी माला ॥टेर॥
बाजरा की रोटी दीजे, ऊपर लूण्यो घी।
सोड़ पथरण सोवण दीजे, घणो पड़ेलो सी ॥ १ ॥
बाजरा को खेत निपजाजे, मतीरा का मेवा।
इतनी बातॉं थे करो तो, करों राम की सेवा ॥ २ ॥
आथूनो तो खेत दीजे बीच में दीजे नाड़ी।
घरवाली न बेटो दीजे भैंस ल्याव पाड़ी ॥ ३ ॥
हिरदा दीजे चाँनणों रे आँख्या दीजे जोत।
इतनी बाताँ नहीं करो तो, वेगी दीजे मौत ॥ ४ ॥
मंदिर आगे तिवारी, दूहण धोली गाय।
"दासमलूको" करे बिनती, सुणज्यो जादव राय ॥ ५ ॥

भजन (१३४)

जीव छोड़ चालो काया रसघन वन में ॥टेर॥
जातो जठे साथ जाती साराँ पैहली करती छाती ।
एक दिन तोड़ नाखी मोय कैसी आई मन में ॥ १ ॥
काठ में जलावे मने दया नहीं आवे तनें ।
फेर मुण्डों ना दिखाऊँ ए भोली काया तन में ॥ २ ॥
कोड़ी २ माया जोड़ी तो भी कहवे या तो थोड़ी ।
निर्लोभियाँ रो ज्ञान विचारो मन में ॥ ३ ॥
ले गंगा जल सौगन खाऊँ इण धोखे में फेर न आऊँ ।
आपां सारां सौगन खाल्यो नहीं आवाँ तन में ॥ ४ ॥
"मीरा" है प्रजापति साखी देखी जैसी साँची भाखी ।
जीव काया ने समझावो ले ले ज्ञान गम में ॥ ५ ॥

भजन (१३५)

हे लकड़ी ! तू बन लकड़ी अब देख तमाशा लकड़ी का ।
गर्भवास से बाहर निकला झूले पालना लकड़ी का ।
पाँच वर्ष की उम्र हुई तब हाथ खिलौना लकड़ी का ।
बीस बरस की उमर भई तैयारी हुई व्याह करने की ।
बाँध सेवरा घोड़ी चढ़ गया तोरन मारा लकड़ी का ।
चालीस बरस की उमर हुई फिकर लगी है बुढ़ापे की ।
साठ बरस की उमर हुई तब हाथ सहारा लकड़ी का ।
अस्सी बरस की उमर हुई तैयारी हुई अब चलने की ।
चार जनां मिल तुझे उठाया विमान बनाया लकड़ी का ।
गंगा तट पर जाकर रक्खा स्नान कराया गंगा का ।

नीचे लकड़ी ऊपर लकड़ी चिता बनाया लकड़ी का।
आधम आध शरीर जला तव ठोकर मारा लकड़ी का।
होरी जैसे फूँक दियो फिर टुकड़ा डाला लकड़ी का।
कहत "कबीर" सुनो कोई साधो खेल बना सब लकड़ी का।
ढोलक लकड़ी बाजा लकड़ी सितार बना है लकड़ी का।
हे लकड़ी...

भजन (१३६)

वन में देख्या दोय बनवासी।
वांरो मुख देख्यां सुख पासी ए माय वन में देख्या ॥टेक॥
भोजपत्र के बस्तर पहिरे,
एजी वांन कूण किया वनवासी ए माय ॥१॥
नैना सूं ये सखी निरखण लायक।
एजी वे तो आपण नगर होय आसी ए माय ॥२॥
धन वांरी मात पिता वांरा धन है।
एजी वे तो हीयड़ो फाट मरजासी ए माय ॥३॥
"तुलसीदास" आस रघुवर की।
एजी वांरा चरणकमल सुख पासी ए माय ॥४॥

भजन (१३७)

गोपाल कहाने वाले फिर गऊ पालक बनकर आओ,
गउओं के कष्ट मिटाओ ॥टेर॥
देख दशा गोवंश की, मन में करें विचार।
गोमाता पर हो रहे, भीषण अत्याचार॥
बस तुम ही हो आधार गाय माता की लाज बचाओ ॥ १ ॥

अमर सुहागण भागण राठोड़ाँ की जाई ॥
पीवरियो सासरियो दोन्यं त्यास्यो मीरा बाई ॥
भगत मीरा की ओल्यूं, "माधोसिंह" गावे रे, माधोसिंह
गावे ॥ आजा० ॥७॥

भजन (१४४)

है प्रेम जगत में सार और कछु सार नहीं।
तूं कर ले हरि से प्यार और कछु प्यार नहीं ॥टेर॥
कहा घनश्याम ने ऊधो से वृन्दावन जरा जाना।
वहाँ की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्त्व समझाना।
विरह की वेदना में, वे सदा बेचैन रहती हैं।
तड़प कर आह भर-भर कर, रो रोकर के कहती हैं ॥है०॥
कहा ऊधो ने हँस कर, मैं अभी जाता हूं वृन्दावन।
जरा देखूं कि कैसा है कठिन अनुराग का बन्धन।
है कैसी गोपियां जो ज्ञान बल को कम बताती हैं।
निरर्थक लोक-लीला का यही गुणगान गाती हैं ॥है०॥
चले मथुरा से जब कुछ दूर, वृन्दावन नजर आया।
वहीं से प्रेम ने अपना अनोखा रंग दिखलाया।
उलझ कर वस्त्र में काँटे, लगे ऊधो को समझाने।
तुम्हारे ज्ञान का परदा, फाड़ देंगे प्रेम दीवाने ॥है०॥
विटप झुक झुक के कहते थे, इधर आओ इधर आओ।
पपीहा कह रहा था, पी कहाँ यह भी तो बतलाओ।
नदी जमुना की धारा शब्द हरि-हरि का सुनाती थी।
भ्रमर गुंजार से भी यह मधुर आवाज आती थी ॥है०॥

गरज पहुँचे वहाँ, था गोपियों का जिस जगह मण्डल।
वहाँ थी शान्त पृथ्वी वायु धीमी व्योम था निर्मल।
सहस्रों गोपियों के मध्य थी, श्रीराधिका रानी।
सभी के मुख से रह रह रह कर, निकलती थी यही वानी।
कहा ऊधो ने यह बढ़कर कि मैं मथुरा से आया हूँ ।।है०।।
सुनाता हूँ संदेसा श्याम का, जो साथ लाया हूँ।
"कि जब यह आत्मसत्ता ही अलख-निर्गुण कहाती है।
तो फिर क्यों मोहवश होकर, वृथा यह गान गाती है" ।।है०।।
कहा श्री राधिका ने, तुम सन्देशा खूब लाये हो।
मगर यह याद रक्खो प्रेम की नगरी में आये हो।
सम्भालो योग की पूँजी, न हाथों से निकल जाये।
कहीं विरहाग्नि में यह ज्ञान की पोथी न जल जाये ।।है०।।
अगर निर्गण हैं हम तुम, कौन कहता है खबर किसकी।
अलख हम तुम हैं तो, किस-किस को लखती है नजर किसकी।
जो हो अद्वैत के कायल, तो फिर क्यों द्वैत लेते हो।
अरे खुद ब्रह्म होकर ब्रह्म को उपदेश देते हो ।।है०।।
अभी तुम खुद नहीं समझे कि किसको योग कहते हैं।
सुनो! इस तौर योगी, द्वैत में अद्वैत रहते हैं।।
उधर मोहन बने राधा वियोगन की जुदाई में।
इधर राधा बनी है श्याम, वियोगन की जुदाई में ।।है०।।
सुना जब प्रेम का अद्वैत ऊधो की खुली आँखें।
पड़ी थी ज्ञानमद की धूल, जिनमें वह धुली आँखें।।
हुआ रोमांच तन में बिन्दु आँखों से निकल आया।
गिरे श्रीराधिका पगपर महा-गुरु-मंत्र तब पाया।। है प्रेम० ।।